मूल्य : 20/-

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17

वर्ष : २

जून २०१८, विक्रमी सम्वत् २०७५
सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११९ दयानन्दाब्द १९५

अंक : १२

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिविश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल
जन्म दिवस : 11 जून

पंडित चमूपति, एम.ए.
स्मृति दिवस : 15 जून

महाराणा प्रताप
जयंती : 16 जून

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883

आर्य समाज नोएडा के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर उपस्थित चुनाव अधिकारी आर.एस. लवानिया,
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी, नवनिर्वाचित प्रधान श्रीमती गायत्री मीना, मंत्री जितेन्द्र सिंह आर्य,
महिला समाज की प्रधाना श्रीमती ओमवती गुप्ता, उपप्रधाना श्रीमती सरला कालरा, कोषाध्यक्षा श्रीमती संतोष लाल।

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
श्रीमती गायत्री मीना 'प्रधान'

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी
संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
व्यवस्थापक
ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

Title Code : UPMUL-200652

घोषणा पत्र संख्या : 153/06.06/2016-17

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : सत्ता स्वार्थ के लिए...	2
2.	आर्यसमाज जीवित और उदात्त...	3
3.	यः प्राणतो निमिषतः	4-5
4.	मनु स्मृति और धर्म	6-7
5.	युवक वर्ग आर्यसमाज की...	8-9
6.	सरकार और सामाजिक...	10
7.	ब्रह्मचर्यम्	11
8.	महापुरुषों को नमन...	12-13
9.	ब्रह्मविद्या और उसके भेद	14
10.	तीन चेतन देवता...	18
11.	समाचार-सूचनाएं	22
12.	सुस्वास्थ्य : जीभ के चटखारे पर...	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221

Web : www.aryasamajnoida.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

सत्ता स्वार्थ के लिए अंधे नेता

नेता शब्द का अर्थ होता है ले जाने वाला अर्थात जो व्यक्ति अपने प्रभाव से समाज एवं राष्ट्र का विकास और उन्नति के पथ पर ले जाता हो एक ऐसा व्यक्ति जिसको समाज के लोग अपना आदर्श मानते हों, जिसके जीवन में विद्या एवं योग्यता हो, जिसके जीवन में नैतिकता हो, जो नियमों एवं सिद्धांतों पर चलना जानता हो, जिसके लिए सत्ता नहीं सत्य की कीमत सबसे बढ़कर हो ऐसे लोग स्वत: ही सामान्यजनों के लिए आदर्श एवं प्रेरणा के पात्र बन जाते हैं।

नेता कहते ही व्यक्ति सुनीति से युक्त नैतिक आदर्श पर चलते हुए समाज को अनुशासन एवं मर्यादा की परिधि में बांधता हो, जिसकी वाणी नहीं अपितु आचरण बोलता हो, जिसके चरित्र का लोग उदाहरण देते हों। विकट परिस्थितियों में भी जो व्यक्ति सिद्धांतों पर अडिग रहता हो, जिसके चरित्र में ईमानदारी, संयम हो, जिसका व्यवहार संतुलित हो ये राजाओं की परम्परा हमारे देश में हमेशा से रही है। किंतु आज अपने देश के नेताओं को देखकर हृदय में अत्यंत पीड़ा होती है। विश्वास ही नहीं होता कि जिस देश में राम, कृष्ण, युधिष्ठिर, अश्वपति, महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, लाल बहादुर शास्त्री आदि नेताओं का देश है।

आज के नेताओं के जीवन में धूर्तता, छल-कपट, ईर्ष्या, द्वेष, सत्ता लोलुपता के अलावा कुछ भी नजर नहीं आता। सत्ता की प्राप्ति के लिए ये नेता कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। कर्नाटक, गोवा, मणिपुर, आसाम ये ऐसे उदाहरण है जो यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं।

■ **आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार**

नेता कहते ही व्यक्ति सुनीति से युक्त नैतिक आदर्श पर चलते हुए समाज को अनुशासन एवं मर्यादा की परिधि में बांधता हो, जिसकी वाणी नहीं अपितु आचरण बोलता हो, जिसके चरित्र का लोग उदाहरण देते हों। विकट परिस्थितियों में भी जो व्यक्ति सिद्धातों पर अडिग रहता हो, जिसके चरित्र में ईमानदारी, संयम हो, जिसका व्यवहार संतुलित हो ये राजाओं की परम्परा हमारे देश में हमेशा से रही है। कितु आज अपने देश के नेताओं को देखकर हृदय में अत्यंत पीड़ा होती है। विश्वास ही नहीं होता कि जिस देश में राम, कृष्ण, युधिष्ठिर, अश्वपति, महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, लाल बहादुर शास्त्री आदि नेताओं का देश है। आज के नेताओं के जीवन में धूर्तता, छल-कपट, ईर्ष्या, द्वेष, सत्ता लोलुपता के अलावा कुछ भी नजर नहीं आता। सत्ता की प्राप्ति के लिए ये नेता कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। कर्नाटक, गोवा, मणिपुर, आसाम ये ऐसे उदाहरण है जो यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं।

आर्यसमाज जीवित और उदात्त संस्था

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

कोई भी समाज अपने आस-पास घट रही घटनाओं से उदासीन नहीं रह सकता/विशेषकर यदि वे घटनाएं राजनीति या सरकार से संबंध रखती हैं। यद्यपि आर्यसमाज एक धार्मिक-सामाजिक संगठन है, परन्तु इसकी 'धर्म' की परिभाषा विशद है, जिसमें मानव जीवन से संबंधित सभी पक्षों का सम्यक् समावेश रहता है।

आर्यसमाज जीवित और उदात्त संस्था है- अनेक राजनीतिक दल पनपते रहेंगे, मरते रहेंगे, अपना कलेवर बदलते रहेंगे। अनेक बाबा-गुरु-अवतार-भगवान्-माताएं आती रहेंगी, जाती रहेंगी, पर जो जितना ही स्वामी दयानन्द के दृष्टिकोण के निकट रहेगा, उतना ही आर्यसमाज का महत्व बढ़ता जायेगा। हिन्दुओं के अनेक रूप हमारे सामने आर्यसमाज का विरोध करने के लिए आये, पर वे चले नहीं, बदलते गये, क्योंकि ये मूर्त्तिपूजा, अवतारवाद, रूढियों, अन्धविश्वासों, वर्गभेदों, देशभेदों, जातिभेदों आदि पर निर्भर थे। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को समझना चाहिए कि वे धरती के पुत्र हैं, सब नदियां उनके लिए एक-सी पवित्र हैं। उनको ईश्वर, ईश्वर के स्वरूप, ईश्वरीय-ज्ञान, ईश्वरीय-व्यवस्था और मानव-मात्र की श्रेष्ठता और समवेत कर्मठता में आस्था है- वे सत्य और ऋत् के उपासक हैं। इस स्वरूप का आर्यसमाज सदा जीवित रहेगा। आगे की मानवता न पैगम्बरों पर एक होने वाली है, न धर्म और न सम्प्रदायों पर, न मन्दिरों-मस्जिदों या गिरजों पर, वेद-वेदांगों पर ही एक होगी, भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र, विकासवान् ज्ञान-विज्ञान के विविध शास्त्र (वेदांग-उपांग) समस्त मानव के एक होंगे। (भारतीय ज्योतिष, चीन देश की केमिस्ट्री, भारतीय रसायन, यूनान की ज्यामिति, इस प्रकार के भौगोलिक शब्द मिट जायेंगे)।

हमारे देश में एक प्राचीन प्रथा थी कि जब कोई व्यक्ति 'उपनिषद्' आदि उच्च विज्ञान का जिज्ञासु होता था, तो पहले उसके 'अधिकारी' होने का निश्चय किया जाता था। 'अधिकारी' का प्रश्न बड़ा आवश्यक और पवित्र है। कई बार इसे तुच्छ-सी बात समझा जाता है, परन्तु यदि ध्यान से देखा जाय तो ज्ञात होगा कि अधिकारी 'अनधिकारी' का प्रश्न प्राकृतिक सिद्धान्तों के सर्वथा अनुकूल है। एक बच्चा चार वर्ष का है। उसको अपने साथी की साधारण-सी चेष्टायें की बड़ी मधुर अनुभव होती हैं।

इनकी विचारशक्ति परस्पर समान है, इसलिये वे परस्पर मिलना और बातें करना चाहते हैं। उन्हें बहुत वीरतापूर्ण प्रतीत होता है। दो-चार वर्ष पश्चात् इसी गेंद जैसी तुच्छ बातों से उनकी रुचि हट जाती है। अब वे रेत या पत्थरों के छोटे-छोटे मकान बनाने में रुचि दिखाते हैं, ठीकरों और कंकरों से वे खेलना चाहते हैं। फिर कुछ वर्ष पश्चात् उनकी रुचि शारीरिक खेलों की ओर हो जाती है और पुराने खेलों को अब वे बेहूदा बताने लगते हैं।

युवावस्था में उन्हें गृहस्थ की समझ उत्पन्न हो जाती है और अब सांसारिक कार्यों में उलझ जाते हैं। धीरे-धीरे उनके मन में इस संसार से विराग और धर्म में प्रवृत्ति का आविर्भाव होता है और त्याग व बलिदान के सिद्धांतों को समझने की शक्ति उत्पन्न होती है। इससे यह स्पष्ट है कि प्रत्येक सिद्धांत को समझने के लिये 'अधिकारी' होना आवश्यक है। आज की किसी भी सभा में-चाहे वह धार्मिक हो या राजनैतिक, 90 प्रतिशत श्रोताओं को वक्ता की बातों में रस नहीं आता। बच्चों या बच्चों के से स्वभाव वाले बड़े-बूढ़ों को भी वही बात पसंद आती है, जिस पर लोग हसें या तालियां पीट दें, अतएव अनधिकारी के सन्मुख ऊंचे सिद्धान्तों का वर्णन करना भी प्रायः हानिकारक होता है।

जब किसी जाति या राष्ट्र में उन्नति की अभिलाषा उत्पन्न हो तो इसको कार्य रूप में परिणत करने का प्रथम आवश्यक साधन उसके व्यक्तियों के आचरण की दृढ़ता है। चरित्र जितना अधिक उच्च और भला होगा, उतनी ही शीघ्रता से उच्च और भले विचार बद्धमूल होंगे। 'चरित्र' के खेत को भली भांति तैयार किये बिना उच्च विचार रूपी बीज बिखेरना, ऊसर भूमि में बीज फेंकने के समान ही व्यर्थ होगा।

उच्च विचारों की शिक्षा देने के साथ-साथ आचरण और चरित्र को ऊंचा रखने का विचार अवश्य होना चाहिये, अन्यथा चरित्र के भ्रष्ट होने के साथ-साथ यदि उच्च विचारों की बातें ही रहीं तो 'पाखंड' का भयानक रोग लग जाना स्वाभाविक हो जायेगा। इसलिए ऋषि दयानन्द के बताये मार्ग पर चलकर देश व राष्ट्र का भला कर अपने और समाज के सभी कार्यों को वेद के आधार पर चलायें तभी भारत फिर से विश्वगुरु और चरित्रवान् राष्ट्र बन सकता है। ○○

यः प्राणतो निमिषतः

इस अंक से ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना के चौथे मंत्र की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है, मनन चिन्तन कर जीवन सफल करें।

- प्रबंध संपादक

(गतांक से आगे...)

स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

मानव जगत्- विद्या बुद्धि विवेक, भौतिक, मानसिक, आध्यात्मिक पक्षों का विकास, परिज्ञान, अन्नमय कोष, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय कोषों की साधना का अवकाश, अवसर। पशु प्रवृत्ति और पशु भोगों से लगाकर ब्रह्मानंद तक अनेक अवस्थाओं का विकास क्रम। एक-एक कोष की साधना, विकास के लिए ऋषियों की योजना और शिक्षा।

उपनिषद् जैसे आध्यात्मिक चिंतन में विभिन्न, उच्च से उच्चतर योनि लोकों का वर्णन उपलब्ध है। यथा १. मानव, २. गंधर्व, ३. पितृ, ४. देव, ५. बृहस्पति, ६. प्रजापति, ७. ब्रह्म।

हम इस वर्णन में अधिकार पूर्वक कुछ कहना नहीं चाहते। हां, इतना अवश्य कहना चाहते हैं कि यदि प्रवृत्ति पशु भोगों में नियंत्रित हो गई और प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय कोषों की ओर प्रवृत्ति हो गई तो आनंद की मात्रा और कालावधि, दोनों का विकास होना संभव सुलभ हो जायेगा।

हम 'प्राणतः निमिषतः' प्राण और चेष्टा पर विचार कर रहे थे। छुईमुई की न्यूनतम चेतन-चेष्टा से लगाकर कम्प्यूटर मानव (जो बीसो अंकों का गुणा क्षणों में लिखने में समर्थ) की विकसित बौद्धिक प्रचेष्टा हमारे ज्ञान में है। पूर्व जन्म की संचित उपलब्धियां भी प्रत्यक्ष जानकारी में है-

आर्यसमाज कलकत्ता के पुराने कार्यकर्ता बंसल जी के परिवार का अर्जुन नामक युवक ४५-५० वर्ष पूर्व समाज के सत्संग में आता था। थोड़ा असामान्य था, स्व. पं. श्री अयोध्या प्रसाद जी पूछते 'अर्जुन!' अमुख तारीख, अमुक महीना, अमुक सन् क्या दिन था? प्रश्न समाप्त होते ही उसे स्फुरण सा होता और तुरंत ही वह अत्यंत सहजभाव से दिन का नाम बोल देता। हमने पचासों बार देखा था। पूर्व दैहिक बुद्धि संयोग की उलब्धि के अतिरिक्त अन्य कोई व्याख्या हमें बुद्धिगम्य नहीं होती।

प्राण तत्व क्या है : वायु तो है नहीं। वायु प्राणों का वाहन है। प्राण व्यष्टि तो है ही, समष्टि भी है। मनस् तत्व आदि की तरह ही प्राण भी व्यष्टि समष्टि दोनों है। अपनी प्रकृति की, प्रवृत्ति की, साधना की सरूपता से मनुष्य सत्व, रज, तम, युक्त प्राणों को ग्रहण करता है। हिमालय की उत्पत्ति, गंगा का नीर, शीतल समीर का वातावरण है। आध्यात्मिक साधक प्राणायाम द्वारा सात्विक प्राणों का संग्रह करेगा। पहलवान दंडबैठक से राजसी और नीच पशुप्रवृत्ति से तामसी प्राणों को ग्रहण करेगा।

आध्यात्मिक साधना का आरम्भ : आजकल कई जगह की योग साधना पद्धतियों में साधना का आरम्भ ध्यान से किया जा रहा है। 'अकरणान् मंद करणं श्रेयः' कुछ न करने से मंद करना भी ठीक ही है। किंतु ऋषियों के अनुभूत मार्ग में प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा और ध्यान का ही क्रम प्रशस्त है। प्राणायाम से प्राणमय कोष, प्रत्याहार से मनोमय कोष, स्वाध्याय से विज्ञानमय कोष, धारणा-ध्यान समाधि से आनंदमय कोष की साधना बुद्धिगम्य है। ईश्वर प्राणिधान से भी बहुत कुछ संभव है। किंतु ईश्वर प्राणिधान स्वयं अपने में जन्मजन्मांतर की साधना से संभव है।

आजकल कई जगह की योग साधना पद्धतियों में साधना का आरम्भ ध्यान से किया जा रहा है। 'अकरणान् मंद करणं श्रेयः' कुछ न करने से मंद करना भी ठीक ही है। कितु ऋषियों के अनुभूत मार्ग में प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा और ध्यान का ही क्रम प्रशस्त है। ईश्वर प्राणिधान से भी बहुत कुछ संभव है। कितु ईश्वर प्राणिधान स्वयं अपने में जन्मजन्मांतर की साधना से संभव है।

महित्वा एक इत् राजा बभूव : हमारे सामने अनेक राजा और अनेक राजाओं का इतिहास उपस्थित है। कोई वंश परंपरा से राजा बनते हैं कोई-कोई युद्ध करके, विजयी बनकर राजा बनते हैं। राजा बनकर कोई 'रामराज' का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। कोई नादिरशाही राज भी चलाते हैं। कितु अपनी महिमा से राजा हो और कौन राजव्यवस्था से महिमावान् हो, ऐसा राजा तो प्रजापति प्रभु ही है। सृष्टि की रचना, पालन, प्रलय, सब प्रभु की ही महिमा है। एक प्राणी मनुष्य पर थोड़ा विचार करें। मनुष्य का शरीर अद्भुत संयंत्र है। जीवन-प्राणन, श्वसन, रक्त संचरण, भोजन पाचन, सब अद्भुत है। फिर इनका ऊर्जा शक्ति आदि से संबंध आश्चर्यजनक है। शिर में पीड़ा हुई तो यह दवा, कान दर्द की दूसरी दवा। दवाइयां मुखमार्ग से पाचन संयंत्र के माध्यम से अपने-अपने गंतव्य को पहुंच जाती है। संसार के किसी संचार विभाग से अधिक सुंदर-समर्थ-परिपूर्ण व्यवस्था, प्रभु की ही प्रधानता है, प्रभु की ही महिमा है।

महित्वा एक इत् राजा बभूव : हमारे सामने अनेक राजा और अनेक राजाओं का इतिहास उपस्थित है। कोई वंश परंपरा से राजा बनते हैं कोई-कोई युद्ध करके, विजयी बनकर राजा बनते हैं। राजा बनकर कोई 'रामराज' का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। कोई नादिरशाही राज भी चलाते हैं। किंतु अपनी महिमा से राजा हो और कौन राजव्यवस्था से महिमावान् हो, ऐसा राजा तो प्रजापति प्रभु ही है।

सृष्टि की रचना, पालन, प्रलय, सब प्रभु की ही महिमा है। एक प्राणी मनुष्य पर थोड़ा विचार करें। मनुष्य का शरीर अद्‌भुत संयंत्र है। जीवन-प्राणन, श्वसन, रक्त संचरण, भोजन पाचन, सब अद्‌भुत है। फिर इनका ऊर्जा शक्ति आदि से संबंध आश्चर्यजनक है। शिर में पीड़ा हुई तो यह दवा, कान दर्द की दूसरी दवा। दवाइयां मुखमार्ग से पाचन संयंत्र के माध्यम से अपने-अपने गंतव्य को पहुंच जाती है। संसार के किसी संचार विभाग से अधिक सुंदर-समर्थ-परिपूर्ण व्यवस्था, प्रभु की ही प्रधानता है, प्रभु की ही महिमा है।

मनुष्य केवल भौतिक (Physical) संयंत्र नहीं है। यह (Psychological) भावनात्मक, (Intellectual) बौद्धिक और आध्यात्मिक (Spiritual) प्राणी है। मानव= भौतिक + भावनात्मक + बौद्धिक + आध्यात्मिक है।

इन सबका आपस में सामंजस्य, समन्वय भी परिपूर्ण है। एक भाषा को लें। उच्चारण संयंत्र, शब्द, उनके अर्थ, भावनाओं से शब्दों का मेल, फिर शब्द-प्रेरित भावना का मन और रक्त संचार समेत अनेक संयंत्रों पर प्रभाव-सब उसी विधाता के विधान की ही तो महिला है-

कोई न पार पावै महिमा अपार तेरी।
हर गुल से आ रही है खुशबू बहार तेरी।।
सब जग के आधार! नमस्कार,
नमस्कार। सूरज और चांद में है तेरा ही उजाला।।
तूने पहन रखी है सितारों का माला।
महिमा अपरम्पार- नमस्कार, नमस्कार।।
शब्द करती नदी बह रही है,
सनसनाती हवा चल रही है। कैसी उन्मादिनी यह महादेव की मधुर माया,
हमने उस ईश में मन लगाया।।

प्रभु की महिमा अपार है और अपनी महिमा के कारण ही प्रभु संसार के पालक व्यवस्थापक राजा हैं।

राजा की महिमा शासन चलाने में, सुव्यवस्था करने में है। इससे भी अधिक महिमा का संपादन स्वार्थ त्याग कर पालन करने में है। यह तो परिवार और समाज की व्यवस्था में भी सुस्पष्ट है। परिवार में कमाने वाले, परिवार का पालन पोषण करने वाले सदस्य की महिमा अधिक होती है। एक श्लोक के दो चरणों पर विचार कीजिए-

सर्वस्य द्वे सुमति कुमति संपदापति हेतु।
एकोगोत्रे प्रभवति पुमान् यः कुटुम्बं बिभर्ति।।

अर्थात् सभी मनुष्यों के पास सुमति और कुमति दो होते ही है। सुमति से सम्पत्ति सुख साधन सुविधा प्रतिष्ठा आदि मिलते हैं और कुमति से आपत्ति-विपत्ति बदनामी आदि मिलते हैं। परिवार में वर्ग समुदाय-समाज में उस व्यक्ति का प्रभाव बढ़ जाता है। उसकी महिमा अधिक होती है जो सबका पालन करता है।

मनुष्य कितना भी त्यागी हो, कितना भी तपस्वी हो, उसे अपने योग क्षेम के लिए कुछ न कुछ भोजन वस्त्र आवास तो चाहिए ही चाहिए। किंतु परमेश्वर अत्यंत सुंदर, संपन्न, धनधान्य से परिपूर्ण संसार बनाता है। सुंदर वन, उपवन, नदी, पहाड़, झरने झील, जल पवन, फल-फूल आदि-आदि। किंतु स्वयं एक कण का भी उपभोग नहीं करता। वह तो निर्लेप है, सब कुछ बनाकर जीवों को प्रसाद की तरह अर्पित कर देता है। सर्वस्व त्यागी है तभी सुखपूर्वक है। जहां त्याग, वहां सुख, जहां भोग वहां रोग-दु:ख बंधन। प्रभु परोपकारमय हैं तभी तो आनंदस्वरूप है। स्वार्थ के कारण दु:ख होता है, परमार्थ के कारण आनंद होता है। वह विश्वपति की महिमा है।

य ईशे अस्य द्विपदः चतुष्पद : प्रभु इस संसार के द्विपाद, चतुष्पाद, जड़चेतन, पशुपक्षी मनुष्य आदि सब पर शासन करते हैं। संस्कृत पाठ है 'ईश ऐश्वर्ये' अंग्रेजी व्याकरण 'ईश to govern' लिखते हैं। अपने-अपने हिसाब से दोनों पर चिंतन करते हैं।

प्रभु ऐश्वर्य के दाता हैं। ऐश्वर्य ईश्वरत्व-ईश्वरभाव को कहते हैं। सांसारिक दृष्टि से ऐश्वर्य के साधनों में प्रमुख हैं- शरीरबल, धन, विद्या आदि। इन सबका दाता परमेश्वर है, मनुष्य तो ग्रहीता, ग्रहण करने वाला है। प्रभु ने ऐश्वर्य प्राप्ति का मार्ग दिखला दिया। आचार-विचार, संध्या सदाचार, व्यायाम ब्रह्मचर्य सभी काया-सम्पत्ति, शारीरिक ऐश्वर्य के साधन हैं। इन मार्गों पर चलकर मनुष्य ऐश्वर्य पा लेता है। ऐसी ही स्थिति विद्या धन आदि की भी है। सभी ऐश्वर्य, चाहे विद्या हो या अन्य कुछ सभी प्रभु की व्यवस्था में सन्निहित हैं। मनुष्य संमार्ग कर चलता है और प्रभु उसकी झोली में ऐश्वर्य डाल देते हैं। किंतु झोली तो ठीक रखी होगी। संमार्ग सदाचार, नियम आदि ही तो झोली को संभालना ठीक रखना है।

(शेष अगले अंक में) ○○

सुधी पाठकों से आत्म निवेदन

कृपया अपने विचारों से अवश्य अवगत करावें ताकि पत्रिका को और सुरुचिपूर्ण बनाने का प्रयास किया जाए।

■ **प्रबंध संपादक : 9871798221**

मनु स्मृति और धर्म

डा. दीवान चन्द, डी.लिट.

(गतांक से आगे...)

जिस मनुष्य से हम सहायता लेने जायें, उसका कर्म उसके कथन से अधिक महत्व रखता है। यह सहायता भी पर्याप्त न हो, तो हम धार्मिक साहित्य की ओर फिरते हैं। जैसा हम कह चुके हैं, श्रुति और स्मृति इस साहित्य में प्रमुख हैं। वेद का स्थान सर्वोच्च है। स्मृति जहां तक वेदानुकूल है, मान्य है, वेद के प्रतिकूल होने पर यह अमान्य है। जहां विचाराधीन विषय की बाबत श्रुति कुछ नहीं कहती, वहां स्मृति के कथन को आदर से देखना चाहिए। मनुस्मृति (२:१२) में कहा गया है-

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।

वेद, स्मृति, सत् पुरुषों का आचार, और अपने आत्मा को प्रिय (ग्रहण करने योग्य) प्रतीत हो, इन चार तरीकों से धर्म का लक्षण होता है। श्रुति और स्मृति में, श्रुति का पद ऊंचा है। स्मृति (२:१३) स्पष्ट शब्दों में कहती है कि 'धर्म की जिज्ञासा करने वालों के लिए श्रुति परम प्रमाण है।' श्रुति को स्वत: प्रमाण कहा जाता है, इसके आदेशों की पुष्टि को सूर्य के प्रकाश में देखते हैं। स्वयं सूर्य को कैसे देखते हैं? कोई अन्य पदार्थ सूर्य को नहीं दिखाता, सूर्य आपही अपने आपको दिखाता है।

सदाचार को हमने किसी भले पुरुष के आचार या आचरण के अर्थ में लिया है, इसे एक दूसरे अर्थ में भी लिया जाता है। जो कुछ भले पुरुषों की प्रशंसा का पात्र है, वह जन साधारण के लिए उपेक्षा का विषय नहीं हो सकता। विचारों की तरह कर्म-विधियों में भी संघर्ष होता है, और इस संघर्ष में जिस विधि को जीतने का अधिकार होता है, वह जीतती है। सदाचार ऐसे स्वीकृत कर्मों का समूह है। कुछ लोगों के विचार में यह समूह ही जन साधारण की नीति है।

धर्म के आकार प्रकार : धर्म की बाबत ज्ञान-प्राप्त करने के लिए दो प्रमुख साधनों, श्रुति और स्मृति का स्वाध्याय है। यहां हम एक स्मृति का अध्ययन कर रहे हैं। इस स्मृति में एक प्रसिद्ध श्लोक में धर्म के लक्षणों का वर्णन किया गया है।

धृतिः क्षमादमो ऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

'धृति, क्षमा, मन को काबू में रखना, चोरी न करना, शौच, इंद्रिय मंयम, बुद्धिमत्ता, विद्या, सत्य, अक्रोध- ये १० धर्म के लक्षण हैं। (६:९१)

पहले धर्म- ज्ञान के स्रोतों के लिए 'लक्षण' का प्रयोग हुआ है, यहां धर्म के आकार-प्रकारों के लिए इसका प्रयोग हुआ है। तर्क की परिभाषा में 'लक्षण' किसी प्रत्यय का विश्लेषण है। मनु ने ऐसा विश्लेषण नहीं दिया, अपितु दो संगत प्रश्नों का उत्तर दिया है। धर्म के १० लक्षण उपर्युक्त श्लोक में बयान किये गये हैं। श्लोक की एक निश्चित परिधि होती है, इसके शब्दों का क्रम भी कविता की मांग से निर्धारित होता है। सूची में जो क्रम दिया है, वह किसी नियम के आधार पर नहीं। यदि एक के स्थान में दो श्लोक होते या श्लोक ही लम्बा होता तो संभव है, सूची में कुछ और लक्षण भी आ जाते। अब तो जो सूची दी गयी है, उसी पर विचार कर सकते हैं।

पश्चिम में प्लेटो ने सदाचार के ४ मौलिक आकार बयान किये- बुद्धिमत्ता, साहस, संयम और न्याय या साम्य। उसने मानव प्रकृति में तीन अंश देखे- चिंतन, कर्मण्यता और उत्तेतना। बुद्धिवंत प्राणी का काम है कि वह अपनी बुद्धि को विकसित करे। कर्मशील प्राणी का काम है कि जो कुछ करे साहस से करे, जो बाधाएं उसके मार्ग में आये उन्हें मार्ग से हटाने का पूरा यत्न करें, और जो असुविधा भी सहनी पड़े, उसकी उपेक्षा करे। यह बाधाएं कुछ तो बाहर से आती है, कुछ अंदर से। जब कोई दूसरा मुझ पर प्रहार करे तो अपनी रक्षा में मुझे हर प्रकार के खतरे के लिए उद्यत होना चाहिए। यह पुरुष का पुरुषत्व है। जब कोई मनुष्य गृहस्थ में प्रवेश करता है तो उसका घर एक प्रकार का किला बन जाता है और उसकी मान मर्यादा की रक्षा करना उसका कर्तव्य हो जाता है। एक रक्षा के लिए जीवन भी जाता हो, तो यह

धर्म की बाबत ज्ञान-प्राप्त करने के लिए दो प्रमुख साधनों, श्रुति और स्मृति का स्वाध्याय है। यहां हम एक स्मृति का अध्ययन कर रहे हैं। इस स्मृति में एक प्रसिद्ध श्लोक में धर्म के लक्षणों का वर्णन किया गया है। धृतिः क्षमादमो ऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।। 'धृति, क्षमा, मन को काबू में रखना, चोरी न करना, शौच, इंद्रिय मंयम, बुद्धिमत्ता, विद्या, सत्य, अक्रोध- ये 10 धर्म के लक्षण हैं। (6:91) पहले धर्म- ज्ञान के स्रोतों के लिए 'लक्षण' का प्रयोग हुआ है, यहां धर्म के आकार-प्रकारों के लिए इसका प्रयोग हुआ है। तर्क की परिभाषा में 'लक्षण' किसी प्रत्यय का विश्लेषण है। मनु ने ऐसा विश्लेषण नहीं दिया, अपितु दो संगत प्रश्नों का उत्तर दिया है। धर्म के 10 लक्षण उपर्युक्त श्लोक में बयान किये गये हैं। श्लोक की एक निश्चित परिधि होती है, इसके शब्दों का क्रम भी कविता की मांग से निर्धारित होता है

भारत में सत्य को बहुत महत्व दिया गया है, प्लेटो ने इसे अपनी सूची में नहीं रखा। संभवतः कारण यह है कि उसका उद्देश्य मौलिक आकारों की सूची देना था और उसने सत्य को मौलिक सद्‌गुण नहीं समझा। हम प्रायः असत्य इसलिए कहते हैं कि हमें सत्य का ज्ञान नहीं होता या हमें सत्य कहने का साहस नहीं होता। जो मनुष्य बुद्धिमान हो और साहसी हो, उसके लिए असत्य कहने का अवकाश ही नहीं होता। मनु की सूची में बुद्धिमत्ता का वर्णन है, परंतु इसके साथ बुद्धिमत्ता के प्रमुख साधन विद्या को भी जोड़ दिया गया है। प्लेटो की सूची में दूसरा सद्‌गुण साहस है। जीवन में आपत्तियां आती ही हैं। इस अवस्था में व्यक्ति के लिए दो मार्ग खुले होते हैं- 1. वह अपने आपको मुकाबला के अयोग्य समझ कर घुटने टेक दे 2. आपत्ति का डटकर मुकाबला करे

सौदा बुरा नहीं। इस साहस के अतिरिक्त नैतिक साहस होता है, इसमें व्यक्ति दूसरों की प्रशंसा-निंदा की परवाह न करके अपने नियम पर आरूढ़ रहता है। सभ्य जीवन में जहां व्यक्ति की रक्षा समाज का उत्तरदायित्व बन गया है, साहस प्रमुख रूप से नैतिक साहस बन गया है। गणतंत्र राज्य बहुसंख्या का शासन समझा जाता है। तथ्य यह है कि शासन सदा एक गठित अल्पसंख्या का होता है, बहुसंख्या अलग-अलग रहने में सुगमता देखती है। विवेक और साहस से निम्न स्थान उत्तेजनों का है। उत्तेतन मानव प्रकृति के अंश हैं, इन्हें उखाड़ कर बाहर फेंक नहीं सकते। यही कर सकते हैं कि इन्हें संयम में रखा जाये। अग्नि की बाबत कहा जाता है कि यह सेवक तो अच्छा है, परंतु स्वामी बहुत बुरा है। यही उत्तेजनों की स्थिति है। हमारी गति के दो रूप होते हैं, कभी हम आगे से आकर्षित होते हैं, कभी पीछे से ढकेले जाते हैं। पीछे से ढकेला जाना उत्तेजन की शक्ति द्वारा होता है। जब गति की दिशा उत्तेजन के द्वारा निर्मित हो, तो उत्तेजन स्वामी होता है, जब गति की दिशा बुद्धि से निर्मित हो और बुद्धि ही निश्चय करे कि उस विशेष स्थिति में कौन सा उत्तेजन काम आ सकता है, तो उत्तेजन सेवक होता है। यही संयम का तत्व है।

प्लेटो ने अपनी सूची में न्याय को किसी विशेष अंश पर स्थित नहीं किया, अपितु इसे साम्य के अर्थ में लिया है। चिंतन, साहस और संयम को उचित सीमाओं में रहना चाहिए, प्रत्येक को 'जियो और जीने दो' के नियम को अपनाना चाहिए।

भारत में सत्य को बहुत महत्व दिया गया है, प्लेटो ने इसे अपनी सूची में नहीं रखा। संभवत: कारण यह है कि उसका उद्देश्य मौलिक आकारों की सूची देना था और उसने सत्य को मौलिक सद्‌गुण नहीं समझा। हम प्राय: असत्य इसलिए कहते हैं कि हमें सत्य का ज्ञान नहीं होता या हमें सत्य कहने का साहस नहीं होता। जो मनुष्य बुद्धिमान हो और साहसी हो, उसके लिए असत्य कहने का अवकाश ही नहीं होता।

मनु की सूची में बुद्धिमत्ता का वर्णन है, परंतु इसके साथ बुद्धिमत्ता के प्रमुख साधन विद्या को भी जोड़ दिया गया है। प्लेटो की सूची में दूसरा सद्‌गुण साहस है। जीवन में आपत्तियां आती ही हैं। इस अवस्था में व्यक्ति के लिए दो मार्ग खुले होते हैं- १. वह अपने आपको मुकाबला के अयोग्य समझ कर घुटने टेक दे। २. आपत्ति का डटकर मुकाबला करे। आंधी में घास झुक जाती है और आंधी ऊपर से गुजर जाती है, ऊंचा वृक्ष टूट जाये, पर झुकता नहीं। साहसी मनुष्य खतरों से डरता नहीं। मनु की सूची में साहस का स्पष्ट वर्णन नहीं, परंतु धृति का जिक्र है, जो साहस से मिलती जुलती है। धैर्यवान पुरुष आरम्भ की असफलताओं से घबराकर इष्ट को छोड़ नहीं देता, वह विश्वास करता है कि अंत में उसे सफलता प्राप्त होगी, और यदि न भी प्राप्त हो, तो संग्राम में जुटे रहना अपने आप में मूल्यवान है। यही साहस का भी तत्व है।

प्लेटो का तीसरा सद्‌गुण संयम है। मनु की सूची में इंद्रियनिग्रह और दम संयम ही है। इंद्रिय संयम के अभाव में हम खाते-पीते हुए वह नहीं देखते कि क्या हितकर है और क्या अहितकर है। मेंदा तो दूर पड़ा होता है, जिह्वा निकट होती है और वह निश्चय करती है। जो कुछ स्वादिष्ट होता है, उसे हम खाते हैं और यह भी नहीं देखते कि खाद्य पदार्थ कितनी मात्रा में खाना चाहिए। जो मनुष्य इंद्रियों को शासन में रख सकता है वह जिह्वा के प्रलोभन का मुकाबला करता है। जिस मनुष्य ने मन पर काबू पा लिया है, उसे मुकाबला करने की आवश्यकता ही नहीं होती, दम प्रलोभन से ही विमुक्त कर देता है। प्लेटो ने न्याय को साम्य के अर्थ में लिया था, वह वैयक्तिक सद्‌गुणों का वर्णन कर रहा था।

साधारण व्यवहार में न्याय का अर्थ नागरिकों का आपसी संबंध है, जिसमें व्यक्ति दूसरे के हित को अपने हित में कुर्बान नहीं करता। चोरी करना अन्याय है क्योंकि चोर दूसरे की कमाई को अपनी कमाई बनाना चाहता है। क्रोध में हम दूसरों की क्षति करना चाहते हैं यह अन्याय है। अक्रोध से क्षमा एक पग आगे जाती है। अक्रोध दूसरे को हानि पहुंचाने से रोकता है, क्षमा हानि पहुंचाने वाले को भी हानि पहुंचाने से रोकती है। समाज में वस्तुओं और सेवाओं का आदान-प्रदान होता है। इससे भी अधिक महत्व की चीज विचारों का आदान-प्रदान है। OO

युवक वर्ग आर्य समाज की ओर कैसे आकर्शित हों?

हीरालाल आर्य
सिद्धांत भास्कर, शाहपुरा

यह सत्य है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा संस्थापित आर्य समाज एक महत्वपूर्ण धार्मिक संस्था है। वर्तमान में इसका महत्व न केवल देश में किंतु विदेशों में भी द्रुतगति से बढ़ रहा है। वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर समस्त विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाना, इनका मूल ध्येय है।

किंतु आर्य समाज मंदिरों में होने वाले साप्ताहिक कार्यक्रमों की ओर दृष्टिपात करें तो यह ज्ञात होता है कि कुछ ही वयोवृद्ध आर्य सज्जन वहां बैठे हुए मिलते हैं। संध्या, यज्ञ, भजन व प्रवचन आदि सम्पन्न करके अपने कार्य की इतिश्री समझते हैं।

नवयुवकों एवं बालक-बालिकाओं की संख्या शून्य होती है। यही स्थिति आर्य सभासदों एवं वार्षिक चुनावों की होती है जिसमें युवक वर्ग बहुत कम सम्मिलित होता है। यह स्थिति आर्य समाज के भावी विकासशील कार्यक्रमों एवं व्यापक प्रचार की दृष्टि से बड़ी चिंतनीय है। इस ओर ध्यान आकर्षित करना आर्य समाज के लिए अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।

आज की दूषित शिक्षा प्रणाली एवं समाज-व्यवस्था से युवक वर्ग जीवनधारा में गोता खा रहा है। उसकी स्थिति बाढ़ में बहते हुए मनुष्य के समान हो रही है। न उसका जीवन सुरक्षित है और न उसके जीवन का कोई लक्ष्य है। देश की वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए, आर्यसमाज की ओर से कई अनगिनत कार्यक्रम युवकों को आकर्षित करने तथा उनका जीवन बनाने के लिए हाथ में लिखे जा सकते हैं।

अब हम उन्हीं कार्यक्रमों का यहां उल्लेख करते हैं जिनको आर्य समाज सरलता से सम्पन्न करा सकता है।

१. गरीब एवं पिछड़े परिवारों के बालक-बालिकाओं एवं युवक वर्ग के लिए शिक्षा की समुचित व्यवस्था आर्य समाज को करनी चाहिए। उन्हें नि:शुल्क शिक्षा देना, गणवेश एवं पाठ्य-पुस्तकें उलब्ध कराना और खेल व मनोरंजन के साधन सुलभ कराना आदि है। इसके साथ ही पूर्ण उपयुक्त छात्रावासों की व्यवस्था करना भी आवश्यक है।

२. आर्यसमाज के महत्वपूर्ण पर्वों जैसे- श्रावणी उपाकर्म, जन्माष्टमी, आर्य समाज स्थापना दिवस, दयानन्द निर्वाण दिवस, श्रद्धानंद बलिदान दिवस व ऋषि बोधोत्सव आदि के अवसर पर युवकों बालक-बालिकाओं को आमंत्रित करना चाहिए। इसकी सूचना न केवल आर्य समाज के विद्यालयों किंतु अन्य विद्यालयों, महाविद्यालयों में भी देनी चाहिए। भाषण, निबंध, कविता वाद-विवाद और कहानी आदि प्रतियोगिताएं आयोजित कर विजेता युवकों को पुरस्कृत भी करना चाहिए।

३. सुरम्य सरोवरों के तटों पर, बाग-

आर्य समाज मंदिरों में होने वाले साप्ताहिक कार्यक्रमों की ओर दृष्टिपात करें तो यह ज्ञात होता है कि कुछ ही वयोवृद्ध आर्य सज्जन वहां बैठे हुए मिलते हैं। संध्या, यज्ञ, भजन व प्रवचन आदि सम्पन्न करके अपने कार्य की इतिश्री समझते हैं। नवयुवकों एवं बालक-बालिकाओं की संख्या शून्य होती है। यही स्थिति आर्य सभासदों एवं वार्षिक चुनावों की होती है जिसमें युवक वर्ग बहुत कम सम्मिलित होता है। यह स्थिति आर्य समाज के भावी विकासशील कार्यक्रमों एवं व्यापक प्रचार की दृष्टि से बड़ी चिंतनीय है। इस ओर ध्यान आकर्षित करना आर्य समाज के लिए अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। आज की दूषित शिक्षा प्रणाली एवं समाज-व्यवस्था से युवक वर्ग जीवनधारा में गोता खा रहा है। उसकी स्थिति बाढ़ में बहते हुए मनुष्य के समान हो रही है। न उसका जीवन सुरक्षित है और न उसके जीवन का कोई लक्ष्य है। देश की वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए, आर्यसमाज की ओर से कई अनगिनत कार्यक्रम युवकों को आकर्षित करने तथा उनका जीवन बनाने के लिए हाथ में लिखे जा सकते हैं

बगीचों में आर्य व्यायामशालाएं बनाई जानी चाहिए। सामूहिक व्यायाम एवं कुश्ती का भली प्रकार प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। प्रतिदिन सामूहिक संध्या एवं सामूहिक यज्ञ का आयोजन भी करना चाहिए। इससे युवक वर्ग स्वस्थ एवं सुंस्कृत होगा।

४. समय-समय पर युवकों के सहयोग से सार्वजनिक स्थानों की सफाई एवं श्रमदान का आयोजन करना चाहिए। कार्य की समाप्ति पर उन्हें जलपान कराना भी उपयुक्त है।

५. आर्य समाज मंदिरों में सुंदर पुस्तकालय एवं वाचनालय की व्यवस्था होनी चाहिए। इसमें युवकों के लिए सुगम व प्रचुर साहित्य तथा पत्र-पत्रिकाएं उपलब्ध हों।

६. मध्यावधि अवकाश एवं ग्रीष्मावकाश के समय पंद्रह दिवसीय या मासिक शिविर सुरम्य स्थानों में आयोजित करना चाहिए जिससे युवक वर्ग आसानी से भाग ले सके। प्रातः ४ बजे से रात्रि के १० बजे तक का सुनिश्चित कार्यक्रम होना चाहिए। इसमें सामूहिक व्यायाम, संध्या, हवन, धार्मिक-शिक्षण, भोजन, स्वाध्याय परीक्षा, विश्राम आदि सम्मिलित हों। युवकों से कोई शुल्क न लिया जाये। इनमें विद्वान, संन्यासी, उपदेशक, व्यायाम शिक्षक आमंत्रित हों।

आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर देश की ज्वलंत समस्याओं को लेकर वार्ता एवं संगोष्ठियों का आयोजन भी करना चाहिए। वर्ष भर में एक या दो बार युवकों का स्नेह-सम्मेलन या प्रीतिभोज भी आयोजित करना चाहिए। इस अवसर पर कवि गोष्ठी, संगीत सम्मेलन अथवा देश भक्तिपूर्ण फिल्म प्रदर्शन आदि का आयोजन किया जा सकता है

७. वर्ष में एक बार धार्मिक परीक्षा का आयोजन करना चाहिए। उत्तीर्ण होने वाले युवकों को प्रमाण पत्र एवं सत्साहित्य भेंट करना चाहिए। परीक्षा के पाठ्यक्रम के अनुसार पुस्तकें एवं पाठ्य सामग्री सुलभ करना भी आवश्यक है।

८. आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर देश की ज्वलंत समस्याओं को लेकर वार्ता एवं संगोष्ठियों का आयोजन भी करना चाहिए।

९. वर्ष भर में एक या दो बार युवकों का स्नेह-सम्मेलन या प्रीतिभोज भी आयोजित करना चाहिए। इस अवसर पर कवि गोष्ठी, संगीत सम्मेलन अथवा देश भक्तिपूर्ण फिल्म प्रदर्शन आदि का आयोजन किया जा सकता है।

१०. आर्य समाजों के बड़े समारोहों में युवकों को अवश्य ले जाना चाहिए। प्रसिद्ध व धार्मिक स्थानों का भ्रमण भी कराना चाहिए।

११. युवक वर्ग की टोलियां बनाकर मेलों के अवसर पर बाढ़ ग्रसित स्थानों, चिकित्सा शिविरों, दुर्घटना स्थलों, आग लगे स्थानों में सेवा कार्य हेतु अवश्य ले जाना चाहिए।

१२. युवक वर्ग के लिए सरल-साहित्य हिन्दी क्षत्रिय भाषा में सुलभ कराना चाहिए। अंग्रेजी व संस्कृत के साहित्य को पढ़ने में कठिनाई होती है।

कोई भी आर्य समाज इन कार्यक्रमों में से कुछ भी अपने हाथ में ले सकता है। इन विविध कार्यक्रमों में युवक वर्ग स्वतः आर्य समाज की ओर आकर्षित होगा और प्रत्येक कार्यक्रम में भरपूर सहयोग देगा। इन कार्यक्रमों की क्रियान्वित से युवक वर्ग पूर्ण धार्मिक, चरित्रवान देशभक्त सुयोग्य नागरिक बन सकेगा। उन्हें देश की चिंता होगी। वैदिक धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा होगी और फिर देश -देशान्तरों में वैदिक-ज्ञान के प्रति अटूट श्रद्धा होगी और फिर देश-देशान्तरों में वैदिक-ज्ञान का प्रसार होगा। पूज्य ऋषि के स्वप्नों को हम इसी प्रकार साकार कर सकते हैं और कोई उपाय नहीं। ००

प्रेरक विचार : 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'

- सर्वप्रथम उस प्रभु का धन्यवाद करो जिसने अपनी असीम कृपा से हम सबको हमारे किन्हीं शुभ कर्मों के फलस्वरूप यह दुर्लभ मनुष्य शरीर प्रदान किया।
- मनुष्य देह धारण की सफलता इसी में है कि अहंकार शून्य, निर्भय और शोकरहित होकर भगवान के गुणगान और भक्ति में तत्पर रहें।
- मानव शरीर भवसागर से पार उतरने के लिए एक प्रकार की सुंदर नौका है बंधन का हेतु नहीं।
- नम्रता बहुत बड़ा गुण है, विद्वान तथा फल वाले वृक्ष हमेशा झुके रहते हैं। सूखे वृक्ष और मूर्ख कभी नहीं झुकते।
- गृहस्थ आश्रम में सुख तभी होता है जब स्त्री और पुरुष दोनों के विचारों में समानता हो।

सरकार और सामाजिक संगठन

कितनी बड़ी विडम्बना है कि हमारा कहने को कुछ नहीं। न अपनी राष्ट्रभाषा, न संस्कृति, न संविधान, न शिक्षाव्यवस्था, जिसे भारतीय कहा जा सके। सब उधार का माल है। हमारी अपनी मान्यता है- विषादपि अमृतं ग्राह्यम् अर्थात् विष से भी अमृत मिले तो ले लेना चाहिए। वेद भी कहता है- आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः (यजुर्वेद २५.१४) सभी ओर से कल्याणकारक बुद्धिबल अर्थात् जो भी बुद्धिग्राह्य हो वह हमें प्राप्त हो। योग्य नहीं, फिर भी यदि हम उसे ढ़ोये चले जा रहे हैं तो उसके दो कारण हो सकते हैं। प्रथम ये कि हमें अपनी श्रेष्ठता की जानकारी नहीं है और द्वितीय ये कि हम जानबूझ कर ऐसा कर रहे हैं। द्वितीय सम्भवतः होना नहीं चाहिए, क्योंकि हम ऐसे कृतघ्न नहीं। प्रथम के अनुसार जानकारी नहीं, तो हमारा दायित्व बनता है कि हम अपने को पहचानें।

भारत वर्ष का अपना गौरवपूर्ण इतिहास और संस्कृति है। साथ ही संस्कृत जैसी वैज्ञानिक भाषा हमारी अपनी कही जाती है और उसमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति करने के लिए अथाह ज्ञानसम्पत्ति है, जिसका दोहन होना चाहिए। प्राकृतिक सम्पदा भी ऐसी है कि विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं, लेकिन दुःखद है उसको समझा नहीं गया और समुचित उपयोग नहीं किया गया। प्रत्येक क्षेत्र में दूसरों के अधीन रहे। समाज को सुव्यवस्थित रखने के लिए यहां की आश्रम व्यवस्था और वर्णव्यवस्था की विश्व में कोई तुलना नहीं। संक्षेप में कह सकते हैं कि किस आयुवर्ग के व्यक्ति को कहां पर रहकर अपने जीवन का योगदान समाज के लिए देना है यह बतलाना आश्रमव्यवस्था का कार्य है और सब

ओमकार शास्त्री
संस्कृत प्रवक्ता, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

आलस्य प्रमादों को छोड़कर 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः' (यजुर्वेद ४०.२) मंत्र के अनुरूप श्रेष्ठ से श्रेष्ठ कर्म करने की सदिच्छा के साथ समाज में एक दूसरे से आगे निकलने की प्रतिस्पर्धा का नाम वर्णव्यवस्था है। उस प्रतिस्पर्धा में समान अवसर होते हुए जो व्यक्ति अपने बुद्धिकौशल के अनुसार जिस कर्म पर आकर ठहर जाता है, उस कर्म के अनुसार उसका वर्ण निर्धारण हो जाता है।

इस प्रकार वर्णव्यवस्था में कर्म की ही तो प्रधानता है किसी को समाज में हीन दिखाने का कार्य नहीं। जो कर्म नहीं करता वह दस्यु है और दस्यु को सत्प्रेरणाओं से समाज की निर्मल धारा में लाना उपदेशकों का या दंड के द्वारा रास्ते पर लाना राजा का दायित्व है। बचपन से कोई दस्यु बने ही नहीं कर्मकौशल से, पुरुषार्थ से सब प्राप्य प्राप्त करे, यह बतलाना शिक्षा का कार्य है। ऐसी उत्कृष्ट शिक्षा के बीजारोपण समाज की भागदौड़ से दूर आश्रमव्यवस्था में निहित हैं, जिसे ब्रह्मचर्य आश्रम कहा जाता है। ब्रह्मचारी आचार्यकुल में प्राप्त अबोध बच्चे की वैदिकी संज्ञा है। यही उसमें मुख्य केन्द्र बिन्दु होता है, जिसका सदुपदेशों से कच्चे घड़े के समान निर्माण करना होता है। उसे आचार्य अपने सान्निध्य में रखते हुए अपनी ज्ञानाग्नि से जैसा स्वरूप देता है वैसा ही मजबूत बनकर गुरुकुलरूपी तप की भट्टी से वह बाहर आता है। निषेधात्मक सोच के लिए हुए जैसे आजकल उग्रवादी जेहादी तैयार करते हैं वैसे ही सकारात्मक सोच के साथ समाज के लिए अपना सब कुछ आहुत कर देने वाले सदाचरणशील, कर्त्तव्यनिष्ठ, समर्पित व्यक्तित्व के धनी आचार्य या गुरु यदि समाज को बदलना चाहें तो वास्तव में बदल सकते हैं।

अधुनातन उदाहरण देश के पिछड़े प्रदेश बिहार की राजधानी पटना का है, जहां एक Super 30 के नाम से ऐसा संस्थान चल रहा है जिसकी गत तीन वर्षों की उपलब्धि है कि वह निर्धन तीस बच्चों को, जो IIT-JEE की कोचिंग को पैसा देकर नहीं खरीद सकते, उन्हें निःशुल्क समर्पणभाव से शिक्षण देता है। बच्चों की श्रद्धा और गुरुओं के समर्पण व विश्वास से लगातार तीसरी बार तीस के तीस बच्चों ने IIT की कठिनतम परीक्षा को उत्तीर्ण करने का अनुकरणीय कार्य किया है, बस, यह समर्पण का नमूना है, यही शिक्षा के क्षेत्र में होना चाहिए। तुच्छ धन के बदले अमूल्य शिक्षा के विक्रय से बचना चाहिए। यही सन्देश Super 30 ने शिक्षा का बाजारीकरण करने वालों को जोर का झटका देकर दिया है। अब ऐसी व्यवस्थाओं को मूर्तरूप देने के लिए शासन को आगे आना चाहिए और निम्नलिखित योजनाओं को कार्यान्वित करवाकर समाज को सुसमृद्ध और सुसंगठित करने में योगदान देना चाहिए।

OO

ब्रह्मचर्यम्

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

ब्रह्मचर्य नाम वेदाध्ययनाय पालनीयः नियमः। व्युत्पत्त्याऽपि अयमेवार्थो लभ्यते। यथा ब्रह्म वेदः तद्ध्ययनार्थं व्रतमपि तच्चरतीति ब्रह्मचारी। यः ब्रह्मचर्यव्रतं शाखानुकूलं पालयति स ब्रह्मचारी कथ्यते।

भारतीयदर्शने वैदिके धर्मशास्त्रे पुराणे च ब्रह्मचर्यस्य महिमा विद्यते। बालकः यदा प्रथमाश्रमे प्रविष्टो भवति तत्र ब्रह्मचर्यस्योपेशं प्राप्नोति। यम-नियमासन प्राणायाम प्रत्याहार ध्यान धारणा समाधिरूपाणि योगस्य अष्टौ अङ्गनि पाजंलिनिर्दिष्टानि सन्ति। तानि सर्वाणि ब्रह्मचर्यस्यैव साधनभूतानि, जन्मतः अष्टमे वर्षे द्विजस्य व्रतबन्धः उपनयन (यज्ञोपवीय) संस्कारो भवति, तस्मिन्काले बालकः दण्डाजिनं कमण्डुज्ज धारयित्वा गुरुकुलं गच्छति। गुरोः सेवया सः स्वं ज्ञातुं समर्थो भवति। तत्रैव वेद वेदांगनामध्ययनं करोति।

पंचविंशतिवर्षाणि आयुषं यावद् द्वादशवर्षात्मकं अध्ययनं समाप्य गृहस्थाश्रमस्य योग्यं स्वात्मानं बुध्वा गुरोराज्ञया गृही भवति। तत्र गुरुकले बसनं नित्यं सन्ध्योपासनं, वेदानामध्ययनं, समिधादानं, नित्यहवनं, ब्रह्मयज्ञदेवर्षिमनुष्यदिव्यपितृतर्पणं पंचायतदेवतापूजनञ्च समाप्य भिक्षार्थ ग्रामं गच्छेत् भिक्षावादिकमादाय गुरवे निवेद्य तेन दत्तमत्रं प्रसन्नतया समुपभुज्य जपयज्ञादिकं समाचरेत्।

एवं प्रकारेण अध्ययनं समाप्य गृहस्थानुकूलं कौशलमवाप्य गृहं प्रविशेत्, इत्थञ्च स स्नातकः राजनीतौ धर्मनीतौ च कुशलः समाजस्य स्वस्थ परिवारस्य ग्रामस्य मंडलस्य प्रांतस्य देशस्य, राष्ट्रस्य च समुन्नत्यै प्रयतमानः सफलं जीवनं व्यतीते।

अस्माकं भारतीयदर्शनेषु पुराणेकुच ब्रह्मचर्यसोत्तर महत्वं वर्णितमस्ति। भगवता वामनेनापि स्वकीयसुरसमाजस्य संरक्षणाय ब्रह्मचर्यनियमान् पालयितुं वामनावतारं स्वीकृत्य बलेः सकाशं सम्प्राप्य पादत्रयीं भूमिश्च समयाचत इति पौराणिकी कथा विद्यते। भीष्मपितामहेः मार्कण्डेयमहामुनिः रामभक्तहनुमदादयोऽखण्ड ब्रह्मचारिणो पुराणषु।

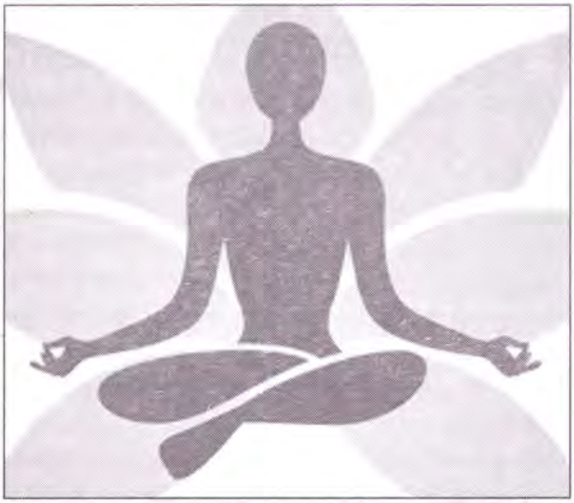

पंचविंशतिवर्षाणि आयुषं यावद् द्वादशवर्षात्मकं अध्ययनं समाप्य गृहस्थाश्रमस्य योग्यं स्वात्मानं बुध्वा गुरोराज्ञया गृही भवति। तत्र गुरुकले बसनं नित्यं सन्ध्योपासनं, वेदानामध्ययनं, समिधादानं, नित्यहवनं, ब्रह्मयज्ञदेवर्षिमनुष्यदिव्यपितृतर्पण पंचायतदेवतापूजनञ्च समाप्य भिक्षार्थं ग्रामं गच्छेत् भिक्षावादिकमादाय गुरवे निवेद्य तेन दत्तमत्रं प्रसन्नतया समुपभुज्य जपयज्ञादिकं समाचरेत्। एवं प्रकारेण अध्ययनं समाप्य गृहस्थानुकूलं कौशलमवाप्य गृहं प्रविशेत्, इत्थञ्च स स्नातकः राजनीतौ धर्मनीतौ च कुशलः समाजस्य स्वस्थ परिवारस्य ग्रामस्य मंडलस्य प्रांतस्य देशस्य, राष्ट्रस्य च समुन्नत्यै प्रयतमानः सफलं जीवनं व्यतीते। अस्माकं भारतीयदर्शनेषु पुराणेकुच ब्रह्मचर्यसोत्तर महत्वं वर्णितमस्ति। भगवता वामनेनापि स्वकीयसुरसमाजस्य संरक्षणाय ब्रह्मचर्यनियमान् पालयितुं वामनावतारं स्वीकृत्य बलेः सकाशं सम्प्राप्य पादत्रयीं भूमिश्च समयाचत इति पौराणिकी कथा विद्यते।

'ब्रह्मचर्येण तपसा देव मृत्युमुपाध्नत' इति मृत्युमपि तर्तुं तिरस्कर्तुं शक्यते ब्रह्मचर्य प्रभावेण।

इत्थश्च ब्रह्मचर्यस्य महिमानं यथार्थरूपेण वर्णयितुं नैव परयति कोऽपि, स्थिरबुद्धिं लब्धुं ब्रह्मचर्यव्रत पालनमेव परमावश्यकं भवति। सात्विकाहारद्वारा मनः स्थिरीकृत्य स्थिरबुद्ध्या सर्वाणि कार्याणि समाचरेत्। तर्हि सर्वाणि अपि तस्य कार्याणि सफलानि भवन्ति। अतः सर्वैरपि नर-नारिभिः ब्रह्मचर्यपालन पूर्वकं सर्वत्र व्यत्रहर्तव्यम्। OO

सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। - *महर्षि दयानन्द सरस्वती*

शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल

जन्म दिवस
11 जून, शत्-शत् नमन

जब-जब भारत के स्वाधीनता इतिहास में महान क्रांतिकारियों की बात होगी तब-तब भारत मां के इस वीर सपूत का जिक्र होगा। राम प्रसाद 'बिस्मिल' एक महान क्रांतिकारी ही नहीं, बल्कि उच्च कोटि के कवि, शायर, अनुवादक, बहुभाषाविद् व साहित्यकार भी थे। इन्होंने अपनी बहादुरी और सूझ-बूझ से अंग्रेजी हुकुमत की नींद उड़ा दी और भारत की आज़ादी के लिये मात्र 30 साल की उम्र में अपने प्राणों की आहुति दे दी। 'बिस्मिल' उपनाम के अतिरिक्त वे राम और अज्ञात के नाम से भी लेख व कवितायें लिखते थे। उनकी प्रसिद्ध रचना 'सरफरोशी की तमन्ना..' गाते हुए न जाने कितने क्रांतिकारी देश की आजादी के लिए फांसी के तख्ते पर झूल गये। राम प्रसाद बिस्मिल ने 'मैनपुरी कांड' और 'काकोरी कांड' को अंजाम देकर अंग्रेजी साम्राज्य को हिला दिया था। लगभग ११ वर्ष के क्रांतिकारी जीवन में उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं और स्वयं ही उन्हें प्रकाशित किया। उनके जीवन काल में प्रकाशित हुई लगभग सभी पुस्तकों को ब्रिटिश सरकार ने ज़ब्त कर लिया था। राम प्रसाद बिस्मिल का जन्म 11 जून 1897 को उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर जिले में हुआ था। उनके पिता का नाम मुरलीधर और माता का नाम मूलमती था। जब राम प्रसाद सात वर्ष के हुए तब पिता पंडित मुरलीधर घर पर ही उन्हें हिन्दी अक्षरों का ज्ञान कराने लगे। उस समय उर्दू का भी बोलबाला था इसलिए हिन्दी शिक्षा के साथ-साथ बालक को उर्दू पढ़ने के लिए एक मौलवी साहब के पास भेजा जाता था। उनके पिता पंडित मुरलीधर राम की शिक्षा पर विशेष ध्यान देते थे और पढ़ाई के मामले में जरा भी लापरवाही करने पर मार भी पड़ती थी। आठवीं कक्षा तक वो हमेश कक्षा में प्रथम आते थे, परन्तु कुसंगति के कारण उर्दू मिडिल परीक्षा में वह लगातार दो वर्ष अनुत्तीर्ण हो गए। राम प्रसाद की इस अवनति से सभी को बहत दु:ख हुआ और दो बार एक ही परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने पर उनका मन भी उर्दू की पढ़ाई से उठ गया। इसके बाद उन्होंने अंग्रेज़ी पढ़ने की इच्छा व्यक्त की। उनके पिता अंग्रेज़ी पढ़ाने के पक्ष में नहीं थे पर रामप्रसाद की मां के कहने पर मान गए। 9वीं कक्षा में जाने के बाद रामप्रसाद आर्य समाज के सम्पर्क में आये और उसके बाद उनके जीवन की दशा ही बदल गई। आर्य समाज मंदिर शाहजहांपुर में वह स्वामी सोमदेव के संपर्क में आये। जब रामप्रसाद बिस्मिल 18 वर्ष के थे तब स्वाधीनता सेनानी भाई परमानन्द को ब्रिटिश सरकार ने 'ग़दर षड्यंत्र' में शामिल होने के लिए फांसी की सजा सुनाई। यह खबर पढ़कर रामप्रसाद बहुत विचलित हुए और 'मेरा जन्म' शीर्षक से एक कविता लिखी और उसे स्वामी सोमदेव को दिखाया।

पंडित चमूपति, एम.ए.

स्मृति दिवस
15 जून, शत्-शत् नमन

पंडित चमूपति का जन्म 15 फरवरी, 1863 ई. में बहावलपुर (अब पाकिस्तान) में हुआ था। इनके पिता का नाम मेहता बसंदा राम था। बालक का नाम उन्होंने चम्पतराय रखा था। पं. चमूपति जी ने मिडिल परीक्षा में अपनी रियासत में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया था। मैट्रिक की परीक्षा पास करके वे बहावलपुर के सादिक ईजर्टन कॉलेज में प्रविष्ट हो गए। कॉलेज में उन्होंने उर्दू काव्य लिखना आरम्भ कर दिया। सर्वप्रथम उन्होंने सिखों के धर्मग्रंथ 'जपजी' का उर्दू में काव्यानुवाद किया। एमए की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने पर आप उसी रियासत के एक मिडिल स्कूल में अध्यापक नियुक्त हो गये। मेहता चम्पतराय के विचारों में एमए करने के उपरांत भी स्थिरता नहीं आ पाई थी। प्रारंभ में वे सिख धर्म की ओर आकृष्ट हुए तो फिर शनैः शनैः नास्तिक बन गये। इसी बीच उन्हें स्वामी दयानंद के ग्रंथों के अध्ययन का सुयोग सुलभ हुआ। परिणाम स्वरूप ईश्वर के प्रति उनकी आस्था तो जम गई किंतु वे शंकर वेदांत की ओर झुकने लगे। यद्यपि वेदांत पर भी उनकी आस्था अधिक दिन तक टिकी नहीं रह पाई किंतु मूर्ति पूजा की ओर उनका झुकाव बढ़ गया। शनैः शनैः जब उनका अध्ययन परिपक्व होता गया तो वे आर्य समाज के सिद्धांतों को स्वीकार करने लगे। उन्हें वैदिक धर्म के प्रति आस्था हो गई। आर्य समाज में प्रविष्ट होने पर वे चम्पत राय से चमूपति बन गये। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्य संचालन हेतु पं. चमूपति जी लाहौर आ गये। सभा द्वारा संचालित दयानंद सेवा सदन के सदस्य बनकर उन्होंने अपना सारा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार में अर्पित कर दिया। गुरुकुल कांगड़ी को भी पंडित चमूपति की सेवाओं का लाभ प्राप्त हुआ था। इस गुरुकुल के वे उपाध्यक्ष, मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य के पदों को सुशोभित करते रहे। 15 जून 1939 को उनका स्वर्गवास हो गया। पं. चमूपति जी ने अनेक ग्रंथों का प्रणयन किया। वेदों का भाष्य किया। वेद की रचना की। पं. चमूपति असाधारण कोटि के विद्वान थे। हिंदू, उर्दू, और अंग्रेजी इन तीनों विषयों पर उनका समान अधिकार था।

महाराणा प्रताप

जयंती : 16 जून
शत्-शत् नमन

महाराणा प्रताप का जन्म उनका जन्म राजस्थान के कुम्भलगढ़ में महाराणा उदयसिंह एवं माता राणी जयवंत कंवर के घर हुआ था। महाराणा प्रताप की माता का नाम जयवंता बाई था, जो पाली के सोनगरा अखैराज की बेटी थी। महाराणा प्रताप को बचपन में कीका के नाम से पुकारा जाता था। महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक गोगुन्दा में हुआ। उनका नाम इतिहास में वीरता और दृढ प्रण के लिये अमर है। उन्होंने कई सालों तक मुगल सम्राट अकबर के साथ संघर्ष किया। महाराणा प्रताप सिंह ने मुगलों को कईं बार युद्ध में भी हराया। 1576 के हल्दी घाटी युद्ध में 20,000 राजपूतों को साथ लेकर राणा प्रताप ने मुगल सरदार राजा मानसिंह के 80,000 की सेना का सामना किया। शत्रु सेना से घिर चुके महाराणा प्रताप को झाला मानसिंह ने आपने प्राण देकर बचाया और महाराणा को युद्ध भूमि छोड़ने के लिए बोला। शक्ति सिंह ने आपना अश्व देकर महाराणा को बचाया। प्रिय अश्व चेतक की भी मृत्यु हुई। यह युद्ध तो केवल एक दिन चला परन्तु इसमें 17,000 लोग मारे गए। मेवाड़ को जीतने के लिये अकबर ने सभी प्रयास किये। महाराणा की हालत दिन-प्रतिदिन चिंताजनक होती चली गई। 25,000 राजपूतों को 12 साल तक चले उतना अनुदान देकर भामा शाह भी अमर हुआ। महाराणा प्रताप ने अपने जीवन में कुल 11 शादियां की थी। महाराणा प्रताप ने भी अकबर की अधीनता को स्वीकार नहीं किया था। अकबर ने महाराणा प्रताप को समझाने के लिये चार शान्ति दूतों को भेजा। हल्दीघाटी का युद्ध : यह युद्ध 18 जून 1576 ईस्वी में मेवाड़ तथा मुगलों के मध्य हुआ था। इस युद्ध में मेवाड़ की सेना का नेतृत्व महाराणा प्रताप ने किया था। इस युद्ध में महाराणा प्रताप की तरफ से लड़ने वाले एकमात्र मुस्लिम सरदार थे- हकीम खां सूरी। इस युद्ध में मुगल सेना का नेतृत्व मानसिंह तथा आसफ खां ने किया। इस युद्ध का आंखों देखा वर्णन अब्दुल कादिर बदायूनीं ने किया। इस युद्ध को आसफ खां ने अप्रत्यक्ष रूप से जेहाद की संज्ञा दी। इस युद्ध में बींदा के झालामान ने अपने प्राणों का बलिदान करके महाराणा प्रताप के जीवन की रक्षा की।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

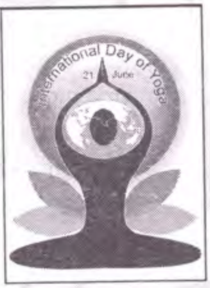

योग दिवस
21 जून, पर विशेष

योग के अंतरराष्ट्रीय दिवस को विश्व योग दिवस भी कहते है। 11 दिसंबर 2014 को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में 21 जून को संयुक्त राष्ट्र आम सभा ने घोषित किया है। भारत में योग लगभग 5,000 हजार वर्ष पुरानी एक मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक प्रथा के रूप में देखा गया है। योग की उत्पत्ति प्राचीन समय में भारत में हुयी थी जब लोग अपने शरीर और दिमाग में बदलाव के लिये ध्यान किया करते थे। पूरे विश्वभर में योग अभ्यास की एक खास तारीख की और योग दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत भारतीय प्रधानमंत्री के द्वारा संयुक्त राष्ट्र आम सभा से हुयी थी। सभी के लिये योग बहुत ही जरूरी है और अगर इसे सुबह-सुबह रोजाना करें तो ये सभी के लिये फायदेमंद साबित होगा। इसका आधिकारिक नाम यूएन अंतरराष्ट्रीय योग दिवस है और इसे योगा दिवस भी कहा जाता है। योग, ध्यान, बहस, सभा, चर्चा, विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति आदि के माध्यम से सभी देशों के लोगों के द्वारा मनाये जाने वाला ये एक विश्व स्तर का कार्यक्रम है। विश्व योग दिवस का इतिहास : 2014 में 11 दिसंबर को संयुक्त राष्ट्र आम सभा के द्वारा हर वर्ष 21 जून को योग का अंतरराष्ट्रीय दिवस या विश्व योग दिवस के रुप में पूरे विश्वभर में योग दिवस को मनाने के लिये घोषित किया गया था। यू.एन. आम सभा के अपने संबोधन के दौरान 2014 में 27 सितंबर को संयुक्त राष्ट्र आम सभा में भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा आह्वान के बाद योग दिवस मनाने की घोषणा की गयी थी। पूरे विश्वभर के लोगों के लिये योग के सभी फायदों को प्राप्त करने के लिये अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में हर वर्ष 21 जून को अंगीकृत करने के लिये संयुक्त राष्ट्र आम सभा से उन्होंने आह्वान किया था। अपने भाषण के दौरान नरेन्द्र मोदी ने यू.एन. की आम सभा से कहा कि 'योग भारतीय परंपरा का एक अनमोल उपहार है।' ये मस्तिष्क और शरीर की एकता को संगठित करता है, विचार और कार्य, अंकुश और सिद्धि, मानव और प्रकृति के बीच सौहार्द, स्वास्थ्य और अच्छे के लिये एक पूर्णतावादी दृष्टिकोण है। ये केवल व्यायाम के बारे में ही नहीं बल्कि विश्व और प्रकृति के साथ स्वयं एकात्मकता की समझ को खोजने के लिये भी है। अपनी जीवनशैली को बदलने और चेतना को उत्पन्न करने के द्वारा ये जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने में मदद कर सकता है। चलिये एक अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को अंगीकृत करने की ओर कार्य करें।

ब्रह्मविद्या और उसके भेद

हरिचन्द्र शर्मा 'वैदिक'

अग्नि की उत्पत्ति वहीं होती है जहां अग्नि को उत्पन्न करने वाली क्रिया की जाती है। भेद केवल इतना ही है कि अग्नि के परमाणु होते हैं और चेतन के कोई परमाणु नहीं होते, इसलिए वह अग्नि के परमाणु में भी व्यापक है और वह इतना सूक्ष्म है कि उसे कोई पकड़ नहीं सकता किंतु उसी के द्वारा समस्त सृष्टि पकड़ी जा सकती है

ब्रह्मविद्या के दो भेद होते हैं। एक परा और दूसरा अपरा। ये दोनों विद्याएं वेदों के ही अंतर्गत हैं। पराविद्या आध्यात्मिक जगत् से संबंधित है। पातञ्जल योग शास्त्र के अनुसार इस विद्या से प्राण से लेकर परमेश्वर पर्यन्त का दर्शन होता है। अपरा विद्या स्थूल जगत् की है। इसमें पृथ्वी से लेकर सूर्य पर्यन्त का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। इन दोनों का केंद्र 'चेतन' है। चेतन से ही सारे जड़ और जीव का ज्ञान होता है। अत: प्रकृति में चेतन उसी प्रकार व्यापक है जिस प्रकार अग्नि विश्व के पदार्थों में व्याप्त है। अग्नि की उत्पत्ति वहीं होती है जहां अग्नि को उत्पन्न करने वाली क्रिया की जाती है। भेद केवल इतना ही है कि अग्नि के परमाणु होते हैं और चेतन के कोई परमाणु नहीं होते, इसलिए वह अग्नि के परमाणु में भी व्यापक है और वह इतना सूक्ष्म है कि उसे कोई पकड़ नहीं सकता किंतु उसी के द्वारा समस्त सृष्टि पकड़ी जा सकती है।

यदि प्रकृति में ज्ञान स्वरूप कोई अदृश्य शक्ति कार्य नहीं करती तो आदि सृष्टि में उद्भिज के पहले ही मनुष्य की उत्पत्ति हो जाती है और बिना दुग्ध-व्यवस्था के ही गौ अपने बछड़े को जन्म देती है। किंतु यह व्यवस्था कहीं भी देखने को नहीं मिलेगी कि भाग्य से पूर्व ही भोक्ता का जन्म हो गया हो। कर्ता या रचयिता का ज्ञान अधूरा नहीं है। वह किसी को उत्पन्न करने से पहले उसके उत्पन्न करने और पालन-पोषण करने वाले उपादानों का निर्माण अवश्य ही करता है।

उत्पत्ति का रहस्य बड़ा ही अद्भुत है। सृष्टि की प्रारम्भिक अवस्था में अनेक प्रकार के उत्पात होते हैं। ये उत्पात करोड़ों वर्ष तक विद्यमान रहते हैं। पश्चात् जब समुद्र, वायु आदि में शीतलता का प्रादुर्भाव होता है तभी उद्भिज आदि प्राणियों का निर्माण होता है। साधारण दृष्टि से उत्पत्ति का विज्ञान समझ में नहीं आता। ब्रह्म में जितने ब्रह्माण्ड विद्यमान हैं, उनकी रचनाओं का विज्ञान अनंत है, जिसकी गवेषणा जहां तक पहुंचती है वे वहीं तक उनकी रचनाओं से अवगत हो पाते हैं। अग्निशिखा के कोश उत्पन्न होकर नष्ट होते हैं, विराट के प्रभाव से पुन: उतने ही नये-नये अग्निशिखा के कोश उसमें उत्पन्न हो जाते हैं।

सूर्य का जठर दो करोड़ सत्तर लाख डिग्री ताप से परमाणु चुल्ली से जलता है। सूर्य अग्नि का पिंड नहीं, किंतु उसमें ज्वलंत गैसों का अपार कोश है और उसी का समुदाय सूर्य का अस्तित्वमय रूप है। उसके एक-एक कोश कुछ ही मिनट के लिए जीवित रहते हैं और पुन: वहां नवीन कोशों की उत्पत्ति हो जाती है। उत्पत्ति के साथ जब उसी अग्नि शिखा के परमाणु उछलकर बाहर पड़ते हैं तब कुछ मिनट के बाद वहां दूसरे परमाणु आकर उसे पुनर्जीवित कर देते हैं। इन वैज्ञानिक प्रक्रियाओं का न विराम है और न ही विरति ही है। श्री वीरेन्द्र कुमार स्नातक, वेद शिरोमणि, आगरा ने आर्यमित्र 14 जुलाई 1963 के विज्ञान एवं आस्तिकवाद नामक शीर्षक में लिखा है कि विज्ञान के वर्गीकृत नियमों में नियंता की सत्ता को मानने वाली विचारधारा आस्तिकता है- तात्पर्य यह है कि विज्ञान ने अनुसंधान और आविष्कारों के आधार पर जिन नियमों का निर्धारण किया है, वे सब स्वत: संचालित हो रहे हैं, ऐसा मानना बुद्धिहीनता का ही परिचय देता है। विज्ञान जब प्रत्येक घटना का विश्लेषण करके उसे असम्बद्ध न बताकर संबद्ध, सुव्यवस्थित और नियमित बताता है तब प्रश्न यह होता है कि आस्तिकता निहित है।

बड़े-बड़े विज्ञान नेताओं ने भी यह स्वीकार किया है कि यह सृष्टि नियमित अवश्य है। परंतु क्यों है, ऐसा किस कारण से हो रहा है यह जानने में हम असमर्थ हैं। विज्ञानविदों कि यह विचारधारा नियमों के नियंता का-आस्तिकता का-निषेध नही करती, अपितु उनके प्रति अपनी अनभिज्ञता मात्र प्रकट करते हुए उसकी खोज को प्रेरणा देती है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार विज्ञान और आस्तिकता उन नियमों का नियंता के साथ संबंध खोजती है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरा निष्फल और निष्प्रयोजन हो जाता है

भौतिकवादी-परमाणु और चेतन कभी नहीं उत्पन्न कर सकते और न कभी उन द्रव्यों को बना सकते हैं जिन द्रव्यों का आदिमूल परमेश्वर था, है बनाते हैं, परंतु इसका तात्पर्य यह नहीं कि वे विराट के ऊपर भी अपना प्रभुत्व स्थापित कर सकें। जीव अल्पज्ञ है, वह सर्वज्ञ की कोटि में कभी नहीं जा सकता। उसी प्रकार ईश्वर अर्थात् अपने निर्माता के ऊपर नियंत्रण लागू नहीं कर सकता। वैज्ञानिकजन जिस चेतना के आधारपर अनुसंधान कार्य कर रहे हैं उसी चेतना का नियंत्रण करना अपने कंधों पर स्वयं चढ़ने के सदृश ही है।

जीवन को यज्ञमय बनाओ

स्वामी श्रद्धानन्द

नैत्यके नास्त्यनध्यायो ब्रह्मसत्रं हि तत् स्मृतम्। ब्रह्माहुतिहुतं पुण्यमनध्यायवषट् कृतम्॥ मनु. २/१०६

मनुष्य के प्राकृतिक भाग को भूख लगती है, उसकी निवृत्ति के लिए तरह-तरह के अच्छे से अच्छे फल और अन्न परमात्मा की ओर से दिये गये हैं। प्यास प्रकृति का एक भाग है उसकी निवृत्ति के लिए चारों ओर शीतल जल बह रहे हैं। क्या मनुष्य को कहने की आवश्यकता है कि भूख और प्यास के बुझने में नागा मत करो? और जब कभी आलस्य या प्रमाद से इन दैनिक कर्त्तयों को पूरा करने में मनुष्य ढील करता है तब शरीर और अच्छे से अच्छा स्वास्थ्य रखने वाला मनुष्य भी इन दैनिक कर्त्तव्यों के पूरा करने में अनियमता करके उसके दंड से नहीं बच सकता। यही अवस्था मन और आत्मा की है।

दैनिक अग्निहोत्र की आज्ञा जहां अपवित्र वायु को स्वच्छ करने के लिए है, वहां उसकी जड़ में यह विचार भी काम करता है कि मनुष्य वायु को जिस प्रकार अस्वच्छ करते हैं उसी प्रकार प्रयत्न से उस वायु की अपवित्रता को दूर करना भी उचित है। किंतु साथ ही इसके, यह दैनिक कर्त्तव्य उन रोजाना पापों की निवृत्ति के लिए भी है जो कि न जानने की अवस्था में प्रत्येक मनुष्य से प्रतिदिन हो जाते हैं। इस कर्म से बुद्धि निर्मल होकर मन की अवस्था पवित्र हो जाती है।

वैदिक आदर्श के अनुसार सबसे बढ़कर मनुष्य का दैनिक कर्त्तव्य ब्रह्म यज्ञ है। दूसरे महायज्ञ केवल इसके सहायक हैं। मुख्य दैनिक कर्त्तव्य यही है

दैनिक अग्निहोत्र की आज्ञा जहां अपवित्र वायु को स्वच्छ करने के लिए है, वहां उसकी जड़ में यह विचार भी काम करता है कि मनुष्य वायु को जिस प्रकार अस्वच्छ करते हैं उसी प्रकार प्रयत्न से उस वायु की अपवित्रता को दूर करना भी उचित है। किन्तु साथ ही इसके, यह दैनिक कर्त्तव्य उन रोजाना पापों की निवृत्ति के लिए भी है जो कि न जानने की अवस्था में प्रत्येक मनुष्य से प्रतिदिन हो जाते हैं

कि जिस तरह मनुष्य के भौतिक शरीर की भूख लगती है इसी प्रकार आत्मिक शरीर को आत्मिक भूख लगती है। अगर उस दैनिक भूख को प्रतिदिन निवृत्त न किया जाये तो मनुष्य की आत्मिक अवस्था भी वैसे ही गिर जाती है जैसे कि भूख लगने पर भौतिक शरीर की अवस्था होती है। इस ब्रह्म यज्ञ अर्थात् वेद रूपी ज्ञान की खुराक से आत्मा की तृप्ति नित्य करनी चाहिए। प्रत्येक काम में अनध्याय संभव है किंतु क्या शरीर के दूसरे दैनिक कर्त्तव्यों में भी कभी नागा हो सकता है? रोग की अवस्था में संभव है कि बनावटी जीवन व्यतीत करने वाले हम मनुष्यों को खुराक बदलने की आवश्यकता हो परंतु कोई भी योग्य वैद्य खुराक को बंद नहीं कर सकता। योग्य वैद्य वही समझा जाता है जो कि रोगी के शारीरिक बल को स्थिर रखने के यत्न से किसी न किसी तरह उसमें खुराक पहुंचाता रहे। इसी तरह से आत्मिक रोग लग जाने पर ब्रह्म यज्ञ के कर्त्तव्य से मनुष्य किसी तरह मुक्त नहीं हो सकता।

इसलिए प्रत्येक आस्तिक पुरुष का कर्त्तव्य है कि नित्य प्रति प्रातः और सायं परमात्मा की उपासना के लिए ब्रह्म के ज्ञान की आहुतियों से आत्मिक यज्ञ किया करें। जब शारीरिक रोग होने पर शरीर को खुराक पहुंचाने से कोई भी मनुष्य नहीं रुकता तो आत्मिक रोग की अवस्था में आत्मिक खुराक से दूर भागना क्या आश्चर्यजनक नहीं है? किंतु यह अवस्था इसलिए होती है कि हम सब अपनी वास्तविक अवस्था को त्यागकर बनावटी जीवन बिता रहे हैं। एक बच्चा जब बीमार होता है तो इधर-उधर भागने के स्थान पर माता की गोद की ओर हाथ पसारता है और जब माता उसे गोद में ले लेती है तो वह विश्वास के साथ अपने रोग को भूल जाता है। जगत् माता से बढ़कर हमारे साथ किस सासंरिक माता का प्रेम हो सकता है? जगत् माता की गोद हमारे लिए हर समय खुली है। फिर हम शारीरिक रोग का बहाना करके उस प्रेम भरी गोद में जाने से संकोच करते हैं और अपने लिए हजारों तरह के क्लेश मोल ले लेते हैं।

OO

"जो परमात्मा उन आदि सृष्टि के ऋषियों को वेद विद्या न पढ़ाता और वे अन्य को न पढ़ाते तो सब लोग अविद्वान ही रह जाते। वेद परमेश्वरोक्त है इन्हीं के अनुसार सब लोगों को चलना चाहिए और जो कोई किसी से पूछे कि तुम्हारा क्या मत है तो यही उत्तर देना कि हमारा मत वेद, अर्थात् जो कुछ वेदों में कहा है हम मानते हैं - *सत्यार्थ प्रकाश*"

Vedas and Monotheism

Dr. Vivek Arya

I found western writers quoting that Swami Dayanand and Aryasamaj learned the very idea of Monotheism i.e. there is only one God from Christianity. They also says that the Vedas support Polytheism means worship of multiple God. The latest entry in in this list of Koenraad Elst. He published an article on Monotheism and its relation to swami Dayanand. He assumes that Swami Dayanand is influenced from the monotheism in Christianity and Islam. That's why he tried to interpret Vedas as supporter of Monotheism. Is there a Vedic monotheism? The occasion for this paper on monotheism and its presence or absence in Hinduism is an upsurge in the Arya Samaj long-standing campaign to convince Hindus of the superiority and Vedic basis of monotheism.

Unfortunately, in its opposition to the predatory religions of Islam and Christianity, it interiorized some of their beliefs and attitudes. Foremost among these was the assumption that monotheism, the belief in a single God annex the condemnation of all worship offered to any being but Him, is the supreme form of religion. Hence, the Arya Samaj decreed that the Vedic religion had always been monotheistic, so that Islamic and Christian missionaries had nothing to teach the Vedic's about the true religion of the One God. If Hinduism now seemed like the polytheistic religion par excellence,this was partly due to post-Vedic degenerative developments and partly to textual misinterpretation of the seemingly numerous god-names in the Vedas. In reality, or so the Arya Samaj claimed, these many gods were only different faces of the One God.

This monotheistic reinterpretation of the Vedas could be excused as a tactical device useful in the Arya Samaj main struggle, viz. against the predatory monotheistic religions.

Ref-Koenraad Elst, online essay Hindus and Monotheism : There is nothing new in the views of Koenraad Elst. Many Christian missionaries had authored similar views. Hervey De Witt Griswold in The Religion of the Rigveda, Christophe Jaffrelot in Religion caste and politics in India, John Campbell Oman in Cults, Customs and Superstitions of India have quoted in similar way.

Interestingly most of them merely copied each other. Truth is that they never tried to to do the in-depth study. Whether what they have embodied in these volumes is wholly true and nothing but true or their verdicts are to be accepted at once as gospel truths, a critical and unprejudiced student of history alone can judge. Some of the authors have no courage to wipe the dust of prejudice from their eyes and have obliged to draw hasty conclusions and wrong inferences. Such writings have done more harm than good.

The theistic reforms now agitating India bear the unmistakable stamp of Christian influence and of English political and social ideas and principles. Analysis of his claim : Perhaps this may be true of the Brahmo samaj but to say that the Aryasamaj is the product of Christian influence and English political ideas reminds me one of some grand old lady who attributed the dawning of the day to the crowing of the particular cock reared by her.

Swami Dayanand the reviver of the Vedas was not familiar with the English language. Interestingly none of his biographies says so. So this assumption that Swami ji studied western indologists and established his Vedic beliefs after drawing inspiration from west can never be proved. The principle of sociology enunciated by swami Dayanand are essentially Vedic in character and purely classical in character. OO

सांस्कृतिक पुनर्जागरण के जनक स्वामी दयानन्द

उन्नीसवीं शताब्दी में जब महर्षि दयानन्द जी ने सिंहनाद करते हुए घोषणा की कि भारतवर्ष के मूल निवासी ही उन महान आर्यों के असली वंशज हैं जिन्होंने आज से हजारों साल पहले ही विज्ञान, कला और साहित्य के क्षेत्रों में वे सभी उपलब्धियां प्राप्त कर ली थीं जिन्हें प्राप्त करने के प्रयास आज के यूरोपियन विद्वान कर रहे हैं तो तथाकथित विद्वद् समाज में हड़कम्प सा मच गया।

स्वामी जी का यह कथन आधुनिक भारत के इतिहास में दूरगामी महत्व का था क्योंकि इससे पहले यूरोपियन विद्वान प्राचीन भारतीय संस्कृति को अंधविश्वास जनित 'सती' तथा 'अस्पृश्यता' जैसी कुरीतियों का पुलंदा कह कर उस पर मनमाने आक्षेप कर रहे थे। यहां तक कि उस काल के तथाकथित भारतीय समाज सुधारक भी हिंदू धर्म के सुधार के लिए उसे ईसाई आदर्शों के अनुरूप ही बनाना चाहते थे। 'सती' जैसी इक्का-दुक्का घटनाओं को इस प्रकार प्रचारित किया गया जैसे हिंदू समाज में हर विधवा को बलात् आत्मदाह के लिए मजबूर किया जाता है।

इन सबका प्रयोजन भारतीय मान्यताओं और रीति-रिवाजों को अमानवीय और अंधविश्वास जनित आस्थाओं पर आधारित सिद्ध करना था और उनके धर्मग्रंथों को मात्र काल्पनिक कथाओं का संग्रह। यहां तक कि वेदों को भी 'चरवाहों के गीत' कह कर उनका तिरस्कार किया गया। मैकाले जैसे व्यक्ति तो यहां तक कहने लगे कि प्राचीन भारत का सम्पूर्ण साहित्य यूरोपियन पुस्तकों के एक कक्ष में समा सकता है। इसी प्रकार ईसाई पादरी भी भारतीय जनता के मानस को ईसाई धर्म की महानता और पश्चिमी सभ्यता की श्रेष्ठता के गुणगान से विमोहित कर रहे थे। वास्तव में, ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा परिचालित यह अभियान एक सोची-समझी साम्राज्यवादी नीति का ही अंग था, क्योंकि वे जानते थे कि किसी भी जाति पर निष्कंटक शासन केवल सामाजिक शक्ति के बल पर नहीं किया जा सकता। इसके लिए विजित जाति को उसके मानसिक और मनोवैज्ञानिक धरातल पर भी परास्त करना पड़ता है जिससे कि उनमें यह विश्वास जम जाए कि विजेता जाति शस्त्र बल में ही नहीं सदाचार और बौद्धिक स्तर पर भी उनसे कहीं अधिक श्रेष्ठ है।

इस प्रकार एक सोची-समझी रणनीति के अंतर्गत ही भारतीय जनमानस में यह विचार पूरी तरह फैलाया गया कि श्रेष्ठ ब्रिटिश जाति उनके कल्याण के लिए ही उन पर शासन कर रही है और वही उन्हें सदियों से फैले अंधविश्वासों और अविद्या के अंधार से निकलकर उनका उद्धार करेगी। इसलिए ब्रिटिश शासन को विदेशी न मानकर अपने हितैशी और मुक्तिदाता के रूप में ही स्वीकार करना चाहिए।

अपनी इस नीति में ब्रिटिश साम्राज्यवाद लगभग पूरी तरह सफल हो चुका था क्योंकि उस काल के तथाकथित समाज सुधारकों ने भी इस तर्क को पूर्ण रूप से स्वीकार कर लिया था कि भारतीय संस्कृति की अपेक्षा यूरोपीय संस्कृति और वैदिक धर्म की अपेक्षा ईसाई धर्म कहीं अधिक श्रेष्ठ है। यहां तक कि जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने कलकत्ता में एक संस्कृत विश्वविद्यालय की योजना बनाई तो राजाराम मोहनराय ने इसका विरोध किया और उसके स्थान पर अंग्रेजी विश्वविद्यालय की स्थापना पर जोर दिया। यही वह समय था जब स्वामी दयानन्द जी ने साम्राज्यवादी षड्यंत्र की शिकार इस मानसिकता पर सीधा प्रहार करते हुए यह घोषणा की कि जब यूरोपीय जातियों के पूर्वक गुफाओं में अधनंगे रहते थे उस समय भी प्राचीन भारतीय सभ्यता पूरी तरह से विकसित थी और जो आविष्कार और खोजें वे आज कर रहे हैं वे सभी प्राचीन भारतीय आर्यों को ज्ञात थीं। उन्होंने वेदों का शास्त्र सम्मत भाष्य करके यह सिद्ध किया कि वेद सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान के भंडार हैं।

इससे ब्रिटिश शासन को वरदान मानकर उसका गुणगान करने वाले तथाकथित विद्वान भी स्तब्ध रह गए। प्राचीन भारतीय सभ्यता की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए ही स्वामी जी ने उन अवैदिक ग्रंथों पर भी प्रहार किया जिन्होंने वैदिक ज्ञान-विज्ञान की अवहेलना की थी और जिनके कारण भारतीय समाज को अंधविश्वास जनति कुरीतियां फैली थीं। स्वामी जी द्वारा भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयों के विरुद्ध खुला अभियान और विदेशी शासकों के कुत्सित प्रयास पर सीधे प्रहार के फलस्वरूप ही भारत में एक बार फिर सांस्कृतिक पुनर्जागरण का सूत्रपात हुआ जिसका प्रमुख आदर्श वैदिक संस्कृति और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार द्वारा प्राचीन आर्यों की धरोहर पर पुनरुद्धार करना था।

स्वामी जी द्वारा चलाए गए इसी अभियान के फलस्वरूप भारतवासियों के हृदय में राष्ट्रीय स्वाभिमान की भावना का संचार हुआ और ईसाई मत के प्रसार और पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण कर रोक लगी। इससे भारतीय युवकों के हृदय में राष्ट्रीय एवं राष्ट्रवाद की प्रखर भावना का उद्रेक हुआ और वे एकजुट होकर स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े।

तीन चेतन देवता माता, पिता व आचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

वेदों में देव और देवता शब्द का प्रयोग हुआ है। देव दिव्य गुणों से युक्त मनुष्यों व जड़ पदार्थों को कहते हैं। परमात्मा अर्थात् ईश्वर परमदेव कहलाता है। देव शब्द से ही देवता शब्द बना है। देवता का अर्थ होता है जिसके पास कोई दिव्य गुण हो और वह उसे दूसरों को दान करे। दान का अर्थ भी बिना किसी अपेक्षा व स्वार्थ के दूसरों को दिव्य पदार्थों को प्रदान करना होता है। इस लेख में चेतन देवताओं की बात कर रहे हैं।

चेतन देवताओं में तीन प्रमुख देव व देवता हैं जो क्रमशः माता, पिता और आचार्य हैं। इन तीनों देवताओं से सारा संसार परिचित है परन्तु इनके देवता होने का विचार वेदों की देन है। वेद इन्हें देवता इसलिए कहता है कि यह तीनों अपने अपने दिव्य गुणों का दान करते हैं। पहले हम माता शब्द पर विचार करते हैं। माता जन्मदात्री स्त्री को कहते हैं। माता के समान शिशु व किशोर का पालन करने वाली स्त्री भी माता कही जाती है। माता देव क्यों कही जाती है? इसका कारण यह है कि माता संतान को जन्म देने व पालन करने में अनेक कष्टों को उठाती है और वह सहर्ष ऐसा करती है। वह अपनी सन्तान से किसी प्रतिकार, धन व सेवा आदि के माध्यम से भुगतान की अपेक्षा नहीं करती।

यह बात और है कि विवेकशील व बुद्धिमान संतानें अपने माता-पिता के उपकारों को जानकर उनकी सेवा करते हैं और माता-पिता के उपकारों से उऋण होने का प्रयत्न करते हैं। इसका लाभ उनको भविष्य में मिलता है।

वह जब विवाहित होकर स्वयं माता-पिता बनते हैं और उनकी सन्तानें होती हैं तो उनके अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा के संस्कार उनकी अपनी बाल सन्तानों में आते हैं। इन संस्कारों का लाभ यह होता है कि वह भी बड़े होकर अपने माता-पिता की सेवा करते हैं। अतः सभी युवाओं व दम्पतियों को अपने माता-पिता की सेवा अवश्य करनी चाहिये। इसका उनको यह लाभ होगा कि उनकी सन्तानें भी बड़ी होकर उनकी सेवा किया करेंगी। संक्षेप में यह भी लिख दें कि माता को सन्तान को अपने गर्भ में धारण करने में अनेक प्रकार की कठिनाईयों व पीड़ाओं का सामना करना पड़ता है। 9 माह की गर्भावस्था में नाना प्रकार की समस्याओं से उन्हें संघर्ष करना पड़ता है।

चिकित्सक माताओं को अनेक प्रकार की सलाह देते हैं व ओषधियां बताते हैं जिनका पालन माताओं को करना होता है। संतान के जन्म के बाद भी शिशु की रक्षा, उसके पालन एवं पोषण में बहुत सावधानी रखनी पड़ती है। अपना भोजन व आचारण भी एक माता के उच्च गुणों से युक्त युवती के अनुरूप करना पड़ता है जिसमें उन्हें अपनी अनेक इच्छाओं व सुख-सुविधाओं का त्याग करना पड़ता है। ऐसा करके सन्तान सकुशल जन्म ले पाती है व उसका पालन हो पाता है। आज हमने दो वर्ष की एक कन्या से फोन पर बातचीत की।

यह दो वर्ष की कन्या अभी शब्दों को स्पष्ट रूप से बोल नहीं पाती। उसके माता-पिता, दादा-दादी व बुआ उसे बोलने का अभ्यास करा रहे हैं। अभी 6 माह से 1 वर्ष का समय और लग सकता है। इससे यह ज्ञात होता है कि सन्तान के निर्माण में माता की प्रमुख भूमिका होती है। माता को प्रसव पीड़ा तो होती ही है साथ ही भाषा का ज्ञान कराने में भी बहुत समय देना पड़ता है। अतः सन्तान का यह कर्तव्य होता है कि वह बड़ी होकर माता को सब सुख सुविधायें प्रदान करें और उन्हें मानसिक, शारीरिक व अन्य किसी प्रकार की असुविधा व दुःख न होने दे। सन्तानों का कल्याण करने और अनेक कष्ट व दुःख सहन करने के कारण माता अपनी सभी सन्तानों के लिए पूजनीय देवता होती है।

पिता भी सन्तान के लिए एक देवता होता है। पिता से ही सन्तान होती है। सन्तान के जन्म में माता व पिता दोनों की ही महत्वपूर्ण भूमिका है। माता-पिता के द्वारा एक आत्मा माता के गर्भ में प्रविष्ट होती हैं। आत्मा के माता के शरीर होने में ईश्वर की प्रमुख भूमिका होती है। ईश्वर यह सब कैसे करता है, अल्पज्ञ जीवात्मा इसे पूर्णतः नहीं जान सकता। ईश्वर ने सन्तान उत्पन्न करने का अपना एक विधान बना रखा है। उसी के अनुसार सन्तान जन्म लेती है। पिता की भूमिका माता व भावी शिशु के लिए आवश्यकता की सभी सामग्री व सुविधायें जुटाने की होती है।

आज अच्छे गुरुकुलों का भी अभाव है जहां आचार्यगण माता-पिता के समान व उससे भी अच्छा, स्वामी श्रद्धानन्द जी के समान, व्यवहार करें और बच्चों की सभी प्रकार की शैक्षिक व स्वास्थ्य विषयक आवश्यकतायें गुरुकुल में पूर्ण हों। आर्यसमाज के कुछ गुरुकुल इसकी आंशिक पूर्ति ही करते हैं। आर्यसमाज के गुरुकुलों में वैल्यू एडीसन की आवश्यकता अनुभव होती है। महर्षि दयानन्द ने अपनी पुस्तक व्यवहारभानु में जैसे आचार्य और शिष्यों का उल्लेख किया है, वैसे आचार्य और शिष्य यदि हों, तो समाज का कल्याण हो सकता है। देश की सरकार मैकाले की पद्धति को प्रमुखता देती है। उसके लिए मोटे मोटे वेतन भी शिक्षकों को देती है। इस पर भी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे संस्कारित न होकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर भी देश विरोधी नारे लगाते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। भ्रष्टाचार की घटनायें लगातार पढ़ रही है। OO

वेदों की अमर कहानी...

➲ मनोरमा घई

सुनो-सुनो ए दुनिया वालों, वेदों की यह अमर कहानी।
वेद हमारे पूज्य हैं इतने, जिनका कोई नहीं है सानी। वेदों की अमृत वाणी।।

सृष्टि रचना करके प्रभु ने, ऋषियों को दिव्य ज्ञान दिया।
अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा ने, ऋग्, यजु, साम, अथर्व नाम दिया।
ओंकार की प्रणव ध्वनि में, उस प्रभु की सत्ता जानी। वेदों की अमर कहानी।।

वेद हमारे पूज्य है इतने, जिनका कोई नहीं सानी।
वेदों की अमृत वाणी, ओ३म् है निज नाम प्रभु का, वेदों ने यह बात बखानी।
वह निराकार है सर्वव्याप्त है, और है अन्तर्यामी। वेदों की अमर कहानी।।

वेदों की अमृत वाणी, ज्ञान कर्म और उपासना का, वैभव हमको बतलाया।
मन को वश में करने का, शिवसंकल्प मंत्र सिखलाया।
गायत्री का नित जाप करो, यह वेद-माता कल्याणी, वेद की अमृत वाणी।।

प्रातः काल संध्या हवन नित, स्तुति प्रार्थना स्वास्ति शान्तिकरण,
यज्ञ करो, शुभ कर्म करो। इंद्रिय दमन के मार्ग सिखलाए।
नित-नित प्रभु का नाम जपो, कभी न पाप कर्म करो।
वह निराकार है, पर सर्वज्ञ है, वह है अन्तर्यामी।।

उसे भुला देने की न करना तुम नादानी, वह है अन्तर्यामी।
वेदों की अमृतवाणी, वेदों की अमर कहानी।
सबके दुःखों का हर्ता है, और कर्मों का पल देता है।

न्याय में रियायत कभी न करता, वह है सब का स्वामी।
वेदों की अमृत वाणी, प्रभु (वह) है अंतर्यामी।।

वेद हमारे पूज्य है इतने, जिनका कोई नहीं सानी।
सह नौ अवतु, सह नौ भुनक्तु, वेदों से है सिखलाया।
संगच्छध्व संवदध्वम् को, उन्नति का मार्ग बतलाया।।

आओ मिलकर चौमासे में, वेदों का पठन-पाठन करें।
ताकि हम भूल ना पाएं कि वेद है प्रभु की वाणी।
जनवाणी और कल्याणी, वेदों की अमृत वाणी।।

वेद पढ़ो, पढ़ाओ जगत् को, ऋषियों ने बतलाया।
ऋषि दयानन्द ने वेदों का, भाष्य करके समझाया।
वेदों का नित अध्ययन करे जो, वह बन जाए ज्ञानी।
वेदों की अमृत वाणी, वेदों की अमर कहानी।।

वेद हमारे पूज्य हैं इतने, जिनका कोई नहीं है सानी।
सारी दुनिया मानी, सारी दुनिया मानी।
वेदों का अमृत वाणी, वेदों की अमर कहानी।।

वेद हमारे पूज्य है इतने, जिनका कोई नहीं है सानी।
वेदों की अमर कहानी, वेदों की अमृत वाणी।
सारी दुनिया मानी, सुनो-सुनो ए दुनिया वालों वेदों की यह अमर कहानी।।

ऋषि को समर्पित...

➲ डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी

एक जंगल में नई बस्ती बसा दी तूने
वक्त पत्थर पर सफल जोंक लगा दी तूने।
एक जंगल में नई बस्ती बसा दी तूने।।

जिनके पैरों में न पायल थी न बिंदिया मुख पर
ऐसी अबलाओं की फिर मांग सजा दी तूने।
एक जंगल में नई बस्ती बसा दी तूने।।

तेरी निष्ठा का कोई मूल्य चुकाये कैसे
बुझती हुई वेद शमा फिर से जला दी तूने।
एक जंगल में नई बस्ती बसा दी तूने।।

ढूंढ़ा इतिहास को देखा न सुना तुझ जैसा
अपने कातिल को भी जीने की दुआ दी तूने।
एक जंगल में नई बस्ती बसा दी तूने।।

दूसरा कृष्ण कहने को जी चाहता है
बांसुरी वेद की दुनिया में बजा दी तूने।
एक जंगल में नई बस्ती बसा दी तूने।।

भूल पायेगी न दुनिया ऐ ऋषि तुझको
आग पानी में दयानन्द लगा दी तूने।
एक जंगल में नई बस्ती बसा दी तूने।।

समर्पण से पाएं परमात्मा

ब्रह्मा कुमार कोमल

यदि आपने मन में किसी प्रकार की धारणा बना रखी है, तो समर्पण नहीं हो सकता। यदि धारणा के साथ समर्पण होगा, तो यह पूर्ण नहीं हो पाएगा। आपने अपनी धारणा का एक खाका मन मे खींच लिया है कि ऐसा व्यक्ति मिलेगा, तो हम समर्पण करेगे।

समर्पण के पूर्व आपने धारणा बना ली। अब आप इस भाव को लेकर चले व्यक्ति को जांचे। कभी कोई आपकी सोच से मेल खा जाएगा, तो आप समर्पण कर देंगे। प्रश्न यह है कि वह समर्पण आपने उसके प्रति किया या अपनी ही धारणा के प्रति किया? और इस तरह का समर्पण हमेशा अधूरा रहेगा, क्योंकि आप कभी पूरे तृप्त नहीं हो सकते।

आप सोचेंगे कि पता नहीं यह आदमी कल बदल जाए, फिर क्या करेंगे? आज बांसुरी बजाता है, कल फेंक दे। और इस आदमी की पूरी जिंदगी का तो आपको पता ही नहीं है। आप कहेगे, यदि तुम सदा ऐसे ही रहे, तो मेरा समर्पण है। जिस दिन देखूंगा कि किसी प्रकार का बदलाव आया, तो उसी दिन हट जाऊंगा। जहां आपकी धारणा टूटेगी, वहीं अपने पोटली बांध ली समर्पण की। मन में धारणा बना लेने से कभी समर्पण नहीं हो पाता है।

जहां आपकी सारी धारणाएं छूट जाती हैं, वहीं समर्पण है। जब आप सब धारणाएं समाप्त कर देते हैं और कहते हैं कि अब हम सब धारणाएं आपके चरणों में रख देते हैं। अब हम शून्य होकर आपको देखते हैं।

किसी व्यक्ति के पास शून्य होकर बैठ जाना समर्पण है। समर्पण शून्य का स्वर है। वह चुप्पी में घट जाता है। बिना किसी प्रकार के शोरगुल या दावेदारी के। कोई गवाह भी नहीं जुटाना है। आप जिस व्यक्ति के पास शून्य होकर बैठ गए, वहीं समर्पण हो गया। आप यदि किसी वृक्ष के पास भी शून्य होकर बैठ गए, तो वहीं समर्पण हो गया। यह आपके न होने का नाम है। यह कोई कृत्य नहीं है, सि आपने कर दिया। यह ऐसी दशा है, जिसमें आपको पता चलता है कि आप हैं या नहीं। जिस व्यक्ति के पास आपको अपने न होने का पता चले, वही गुरु है। जिसके पास आपको अपने होने का पता चले, वहां मत टिकें। जिस व्यक्ति के पास मैं की सब दीवारें गिरने लगें, वहां टिक जाएं।

यहां मिटने की जगह है, लेकिन यही मुश्किल है। जहां आप देखते हैं कि मिटने का डर है, वहां से आप भागने लगते हैं। आप सोचते हैं कि यह आदमी तो सब धारणाएं मिटा देगा। भागो, अपने को बचाओ। जिससे आप भागते हैं, वही वह आदमी था, जहां आपको रुकना था, क्योंकि वहीं समर्पण है। जहां समर्पण हो, वहीं परमात्मा है।

'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 24 वर्षों से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 100 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है कृपया उदार हृदय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTB10SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। धन्यवाद!

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)

प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221

बेटी का प्यार

मेरे जीवन की अविस्मरणीय घटना

वन्दना भाटिया

कहते हैं कि बेटियां मां-बाप की रूह होती हैं, तभी तो उनके दुख-दर्द को, उनकी इच्छाओं को, उनकी पसंद-नापसंद को गहराई से समझ पाती हैं और दिल से हर पल की भागीदारी बनती हैं। सच है, बेटियों से ही घर की रौनक होती है। मुझे अपनी बेटी पर गर्व है। भगवान ऐसी बेटियां सबको दे!

मैं बचपन से ही संगीत प्रेमी रही हूं। गाने सुनना और गुनगुनाना मेरे शौक रहे हैं। यूं तो मुझे लगभग सभी गायक, गायिकाए पसंद हैं पर न जाने क्यों अरिजित सिंह की आवाज दिल के अंदर तक उतर जाती है और उनके गाने सुनकर एक अजीब सा सुकून मिलता है। सच कहूं तो मैं अरिजित सिंह की आवाज की एक बहुत बड़ी 'फैन' चुकी हूं।

अभी दिसंबर में मुझे पता चला कि अरिजित सिंह का लाइव कोन्सेर्ट 17 फरवरी, 2018 को गुरुग्राम में होना है। जैसे कि हम सबको पता है कि इस तरह के शो की टिकट बहुत महंगी होती है, तो मैंने हर संभव कोशिश की कि किसी तरह से मुझे उस शो के पास मिल जाये, या कुछ डिस्काउंट मिल जाये पर अरिजित के शो का लोगों में इतना क्रेज था कि मैं किसी भी तरह पास पाने में सफल नहीं हो पाई।

कुछ ही दिनों में मेरी ट्रांसफर दिल्ली से जम्मू शाखा में हो गई। अब तो मुझे लगने लगा कि मैं किसी भी तरह यह कॉन्सर्ट नहीं देख पाऊंगी। अपने परिवार से पहली बार इतनी दूर अकेले रहने का दुख ही मुझे बहुत व्यथित कर रहा था। इसलिए यह शो देखने की ख्वाहिश कहीं दिल में ही दफन हो गई। पर शायद मेरी बेटी ने मेरा दुख समझा और अपनी मां को खुशी देने के लिए दिल ही दिल में ऐसी प्लानिंग कर ली जो शायद मैं सपने में भी नहीं सोच सकती थी।

मेरी बेटी एमिटी विश्वविद्यालय में एमबीए के आखिरी सत्र की विद्यार्थी है। उसने मुझे फोन करके कहा कि आपको 17 फरवरी, 2018 को मेरे कॉलेज पहुंचना है क्योंकि हर विद्यार्थी की उसके माता-पिता के साथ कॉलेज कैम्पस में फोटो खींची जाएगी और कॉलेज के डीन ने कहा है कि सभी पैरेंट्स का आना आवश्यक है। उस दिन कुछ कारणों से मेरा दिल्ली जाने का प्लान नहीं था इसलिए आनन-फानन में ट्रेन की टिकट बुक करवाई गई जो कि कंफर्म भी नहीं हो पाई और मैंने आरएसी टिकट के साथ ही जाने का फैसला लिया क्योंकि अपने बच्चों की जरूरत या खुशी हर मां-बाप की पहली प्राथमिकता होती है।

अंततः मैं 17 फरवरी को सुबह 8 बजे घर पहुंची तो एक बहुत बड़ा Surprise मेरा इंतजार कर रहा था। मेरे घर पहुंचते ही मेरी बेटी ने अपने बैग से अरिजित सिंह के शो की दो टिकटें निकाली और प्यारी सी प्यार की झप्पी के साथ मुझे पकड़ा दी। और मैं...मैं तो जैसे Speechless हो गई। तो कॉलेज का फोटो सेसन.. सिर्फ एक बहाना था... मुझे दिल्ली बुलाने का... और वो भी इतने बड़े Surprise के साथ।

थोड़ी देर में जब मैं कुछ सामान्य हुई तब उसने बताया कि यह 16000/- रुपये की दो टिकटें उसने अपनी पॉकेट मनी की Savings में से ली हैं तो जैसे मुझे विश्वास ही नहीं हुआ, क्योंकि वो तो हमेशा अपनी सेविंग्स, पॉकेट मनी इत्यादि को लेकर बहुत ही सजग रहती थी और एक-एक रुपये का हिसाब रखती थी और अभी पढ़ाई ही कर रही थी, उसकी अपनी कोई Earnings भी नहीं थी। मेरी आंखें नम हो गई और मैंने उसे बहुत-बहुत प्यार किया। बात सिर्फ पैसों की नहीं थी, बात तो उसके दिल में अपनी मम्मा के प्यार और इज्जत की थी तभी तो उसने अपनी मम्मा की खुशी के लिए अपनी पल-पल जोड़ी हुई सेविंग्स को एक पल में खर्च कर दिया...। सच, मैं उन पलों को अपने जीवन में कभी भी नहीं भूल पाऊंगी।

कहते हैं कि बेटियां मां-बाप की रूह होती हैं, तभी तो उनके दुख-दर्द को, उनकी इच्छाओं को, उनकी पसंद-नापसंद को गहराई से समझ पाती हैं और दिल से हर पल की भागीदारी बनती हैं। सच है, बेटियों से ही घर की रौनक होती है। मुझे अपनी बेटी पर गर्व है। भगवान ऐसी बेटियां सबको दे!

OO

समाचार - सूचनाएं

- 27 मई को जेपी अस्पताल के वरिष्ठ डाक्टरों की टीम द्वारा आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा के तत्वावधान में निशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन प्रात: 10 से 1 बजे तक किया जा रहा है।

- स्वामी दीक्षानन्द स्मृति के उपलक्ष्य में देहरादून के तपोवन में दर्शन अग्निहोत्री परिवार द्वारा स्वामी दीक्षानंद जी की स्मृति में भव्य कार्यक्रम ओजित किया गया।

- KAYP शिविर 9-17 जून विवेक विहार आर्य स्कूल।
- 11 जून पं. राम प्रसाद बिस्मिल जन्म
- 15 जून पं. चमूपति एमए देहान्त स्मृति
- 16 जून महाराणा प्रताप जयंती
- 21 जून अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

- 6-8 जुलाई अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन, सार्वदेशिक सभा दिल्ली के तत्वावधान में हरिद्वार में आयोजित होगा।
- 17 जुलाई पं. तुलसीराम स्वामी देहांत।

"ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, अन्तर्यामी, अजर, अमर. अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है।
उस सर्वव्यापक ईश्वर को योग द्वारा जान लेने पर हृदय की अविद्यारुपी गांठ कट जाती है, सभी प्रकार के संशय दूर हो जाते हैं और भविष्य में किये जा सकने वाले पाप कर्म नष्ट हो जाते हैं, अर्थात ईश्वर को जान लेने पर व्यक्ति भविष्य में पाप नहीं करता।"

- महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

चुनाव सूचना

आर्यसमाज बी-69, सैक्टर-33, नोएडा का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

6 मई को आर्य समाज आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति (पं.) बी-69, सेक्टर-33 नोएडा का वार्षिक साधारण अधिवेशन आयोजित किया गया जिसमें पिछले वर्ष का वृतांत व उपलब्धियों पर मंत्री आर्य कै. अशोक गुलाटी द्वारा प्रकाश डाला गया। कोषाध्यक्ष श्री नरेंद्र सूद द्वारा वर्ष 2017-18 के लिए आमदनी और खर्चा (Provisional balance sheet) पेश किया गया जिसे सभा ने पारित किया। प्रधान श्री रविन्द्र सेठ जी द्वारा समस्त सदस्यों, अधिकारियों व अन्यों का उन्हें पिछले वर्ष दिए सहयोग के लिए धन्यवाद दिया व नई कार्यकारिणी को सहयोग की बात की गई। चुनाव अधिकारी श्री आर.एल. लवानिया की देखरेख में आर्य समाज के निम्नलिखित अधिकारी निर्वाचित हुए-

श्रीमती गायत्री मीना-प्रधान, श्री रविशंकर अग्रवाल-उपप्रधान, श्री जितेन्द्र सिंह-मंत्री

महिला समाज : श्रीमती ओमवती गुप्ता-प्रधाना, श्रीमती सरला कालरा-उपप्रधाना, श्रीमती आदर्श बिश्नोई-मंत्री, श्रीमती संतोष लाल-कोषाध्यक्षा

आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबन्ध समिति (पं.) श्रीमती गायत्री मीना-प्रधान, श्री रविशंकर अग्रवाल-उपप्रधान, श्रीमती आदर्श बिश्नोई-सदस्य।

सभी अधिकारियों को बधाई! ■ **प्रबंध संपादक**

सूचना : आदरणीय सदस्यों से निवेदन है कि आपकी प्रिय मासिक पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है और आप तक समय पर पहुंच रही है।
आपने सदस्यता ग्रहण करके वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु जो सहयोग प्रदान किया तदर्थ धन्यवाद!
कुछ सदस्यों का मासिक सदस्यता शुल्क जनवरी 2018 को समाप्त हो गया है फिर भी पत्रिका निरंतर प्रेषित की जा रही है। अधिक समय तक शुल्क न मिलने पर पत्रिका का प्रेषण करना संभव नहीं हो पाएगा। अतः आपसे निवेदन है कि अपना शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें।
चैक/मनीआर्डर 'आर्यसमाज' के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010100282, IFSC- UTB10SCN560 में जमा करा कर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें।

■ **प्रबंध संपादक, वैदिक संस्कृति, आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) मोबाइल : 9871798221**

'विश्ववारा संस्कृति' के नियम व सविनय निवेदन

1. यदि 'विश्ववारा संस्कृति' दिनांक 15 तक नहीं पहुंचती है तो आप प्रधान संपादक के नाम पत्र डालें। पत्र मिलते ही 'विश्ववारा संस्कृति' पुनः भेज दी जायेगी।

2. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा के नाम भेजें। वीपी, रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जायेगा।

3. लेख संपादक 'विश्ववारा संस्कृति' के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त होने चाहिए तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुंदर लेख कागज के एक ओर लिखे होने चाहिए।

4. 'विश्ववारा संस्कृति' में विज्ञापन भी दिये जाते हैं, परंतु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जायेगा।

5. यह 'विश्ववारा संस्कृति' पत्रिका समाज-सुधार की दृष्टि से मानव कल्याणार्थ निकाली जाती है। इसमें आपको धर्म, यज्ञ कर्म, समाज सुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, स्वास्थ्य, योगासन, सदाचार, संस्कार, नैतिकता, वैदिक विचार, शिक्षा आदि एवं अन्य ऐसे विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।

6. 'विश्ववारा संस्कृति' के दस ग्राहक बनाने वाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क 'विश्ववारा संस्कृति' भेजी जायेगी तथा पचास ग्राहक बनाने वाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क पत्रिका भेजी जायेगी तथा उसका फोटो सहित जीवन-परिचय 'विश्ववारा संस्कृति' में निकाला जायेगा।

7. अन्य पत्र-पत्रिकाओं में पहले छपा हुआ लेख 'विश्ववारा संस्कृति' में नहीं छापा जायेगा।

8. अनाधिकृत रूप से लिए लेख, रचना, कविता के लिए प्रेषक ही उत्तरदायी होंगे।

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

'विश्ववारा संस्कृति'
आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, उप्र
संपर्क सूत्र : 0120-2505731, 9871798221
ई-मेल : info.aryasamajnoida33@gmail.com
captakg21@yahoo.co.in

स्वामी दयानंद सरस्वती

आर्यसमाज की स्थापना के साथ ही स्वामी जी ने हिन्दी में ग्रन्थ रचना आरम्भ की। साथ ही पहले के संस्कृत में लिखित ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद किया। 'ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका' उनकी असाधारण योग्यता का परिचायक ग्रन्थ है। 'सत्यार्थप्रकाश' सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ है। अहिन्दी भाषी होते हुए भी स्वामी जी हिन्दी के प्रबल समर्थक थे। उनके शब्द थे - 'मेरी आंखें तो उस दिन को देखने के लिए तरस रहीं हैं, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक भाषा को बोलने और समझने लग जायेंगे।' अपने विचारों के कारण स्वामी जी को प्रबल विरोध का भी सामना करना पड़ा। उन पर पत्थर मारे गए, विष देने के प्रयत्न भी हुए, डुबाने की चेष्टा की गई, पर वे पाखंड के विरोध और वेदों के प्रचार के अपने कार्य पर अडिग रहे। इन्होंने शैवमत एवं वेदान्त का परित्याग किया, सांख्ययोग को अपनाया जो उनका दार्शनिक लक्ष्य था और इसी दार्शनिक माध्यम से वेद की भी व्याख्या की। जीवन के अन्तिम बीस वर्ष इन्होंने जनता को अपना संदेश सुनाने में लगाये। दक्षिण में बम्बई से पूरा दक्षिण भारत, उत्तर में कलकत्ता से लाहौर तक इन्होंने अपनी शिक्षाएं घूम-घूम कर दीं। पण्डितों, मौलवियों एवं पादरियों से इन्होंने शास्त्रार्थ किया, जिसमें काशी का शास्त्रार्थ महत्वपूर्ण था। इस बीच इन्होंने साहित्य कार्य भी किये। चार वर्ष की उपदेश यात्रा के पश्चात् ये गंगातट पर स्वास्थ्य सुधारने के लिए फिर बैठ गये। ढाई वर्ष के बाद पुनः जनसेवा का कार्य आरम्भ किया।

OO

स्वास्थ्य

बीमारियों पर कंट्रोल

जीभ के चटखारे पर काबू से पा सकते हैं

शारीरिक रूप से सक्रिय रहना, संतुलित आहार लेना, नमक कम खाना, स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक गतिविधियों से दूर रहना आदि के द्वारा ब्लडप्रेशर को सामान्य रखा जा सकता है।

हाईपरटेंशन से बचा जा सकता है

ब्लडप्रेशर को समान्य बनाए रखने के कई तरीके हैं। डॉक्टर द्वारा बताई गई दवाई लेना, शारीरिक रूप से सक्रिय रहना, संतुलित आहार लेना, नमक कम खाना, स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक गतिविधियों से दूर रहना आदि के द्वारा ब्लडप्रेशर को सामान्य रखा जा सकता है। परंतु इस समस्या की अनदेखी करने से गंभीर परिणाम हो सकते हैं और यही कारण है कि आपको इस बीमारी की गंभीरता को अनदेखा नहीं करना चाहिए।

अनियमित जीवन शैली और जिंदगी के लिए भागदौड़ में लोग लाख कोशिशों के बावजूद अपनी सेहत पर पूरी तरह ध्यान नहीं दे पाते। इसकी वजह से शरीर अनेक ऐसी बीमारियों से ग्रसित हो जाता है कि कई बार ये बीमारियां जान लेवा तक साबित हो जाती हैं।

पैसा कमाने की भागदौड़ में कहीं सेहत पीछे न छूट जाए। अगर सेहत ही नहीं रहेगी तो भागदौड़ कर कमाया गया पैसा किस काम का। जहां जीवन के लिए पैसे का महत्व है, वहीं पैसा कमाने के लिए सेहत की प्राथमिकता होनी चाहिए। इसलिए जबान के चटखारे पर अगर कंट्रोल रखा जाए और दिनचर्या को भौतिकवाद से दूर रखकर सेहत को ध्यान में रखकर निर्धारित किया जाए तो ब्लड प्रेशर, शुगर, तनाव, अवसाद और पेट संबंधी जैसी बीमारियों पर काफी हद तक कंट्रोल पाया जा सकता है। वर्तमान दौर में अनियमित जीवन शैली और जिंदगी के लिए भागदौड़ में लोग लाख कोशिशों के बावजूद अपनी सेहत पर पूरी तरह ध्यान नहीं दे पाते। इसकी वजह से शरीर अनेक ऐसी बीमारियों से ग्रसित हो जाता है कि कई बार ये बीमारियां जान लेवा तक साबित हो जाती हैं। हाईप्रटेंशन, खानपान पर ध्यान न दिये जाने की वजह से कोलेस्ट्राल और सबसे ज्यादा मधुमेह ऐसे रोग हैं जिनके रोगियों की संख्या में दिनों दिन वृद्धि हो रही है। हाईप्रटेंशन और इसकी वजह पैदा होने वाला मधुमेह ऐसा रोग है जिसकी वजह से अन्य कई बीमारियां भी पैदा होती हैं। इसके इलाज के लिए यूं तो एलोपैथ में जहां अनेक गोलियां और इंजेक्शन विकसित किये गए हैं, वहीं आयुर्वेद, होम्योपैथि पद्धति की तरफ भी पीड़ित चिकित्सक और पीड़ित आकर्षित हो रहे हैं।

शुगर पर पा सकते हैं कंट्रोल

अनियमित जीवन सोने-जागने का कोई समय निर्धारित न होना, खान पान में केजुअल होना। अधिक स्पाइसी भोजन और मीट, चाट पकौड़े आदि के ज्यादा सेवन से ब्लड प्रेशर, पेट रोगों और शुगर जैसी बीमारियों का जन्म होता है। जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि यदि आप अपनी दिनचर्या में आर्थिक पहलू से ऊपर सेहत का पहलू रखें और जीभ के चटखारे पर कंट्रोल रखें तो दूसरी बीमारियों के साथ शुगर पर भी काबू पाया जा सकता है। इसके अलावा आयुर्वेद में भी ऐसी देशी दवाएं हैं जिनसे इस पर काबू पाने में मदद मिलती हैं। लंबे अर्से तक चले वैज्ञानिक परीक्षणों और शोधों के बाद वैज्ञानिक औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ऐसी दवा खोज ली है जिससे सफलतापूर्वक शुगर रोगियों का इलाज हो रहा है। बहुत से एलोपैथिक डाक्टर भी शुगर के रोगियों को सीएसआईआर की एमिल फार्मास्युटिकल द्वारा तैयार बीजीआर-34 नामक इस दवा को प्रसक्राइब कर रहे हैं। यह दवा सीएसआईआर के लखनऊ स्थित शोध संस्थान नेशनल बॉटनीकल रिसर्च इंस्टीट्यूट (एनबीआरआई) और सेंट्रल इंस्टीट्यूट फॉर मेडिसिन एंड एयरोमेटिक प्लांट्स (सीमैप) ने पांच साल के अनुसंधान के बाद ईजाद की गई।

हरी सब्जियों का करें सेवन

हरी सब्जियों का सेवन भी बहुत सी बीमारियों को दूर रखने में मददगार है। फूलगोभी, बंदगोभी, पालक, ब्रोकली, गाजर, पत्तेदार सब्जियां जैसे मेथी, बथुआ, सरसों का साग भी लाभकारी है। आप जितना ज्यादा ये सब्जियां खाएंगे उतना ही फायदा होगा। इनको खाने से आपकी क्रेविंग भी कम होगी और वजन भी नहीं बढ़ेगा। आप इनका उपयोग सूप और सलाद के रूप में भी कर सकते हैं। ऐसा करने से मधुमेह, हाईपरटेंशन और कोलेस्ट्रोल कंट्रोल करने में मदद मिलती है।

संकलन : आर्यसमाज, नोएडा

आर्य समाज राजनगर एक्स. गाजियाबाद में प्रवचन करते आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी।

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. विनय विद्यालंकार जी
के साथ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी।

आर्य समाज हापुड़ में प्रवचन करते हुए
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी।

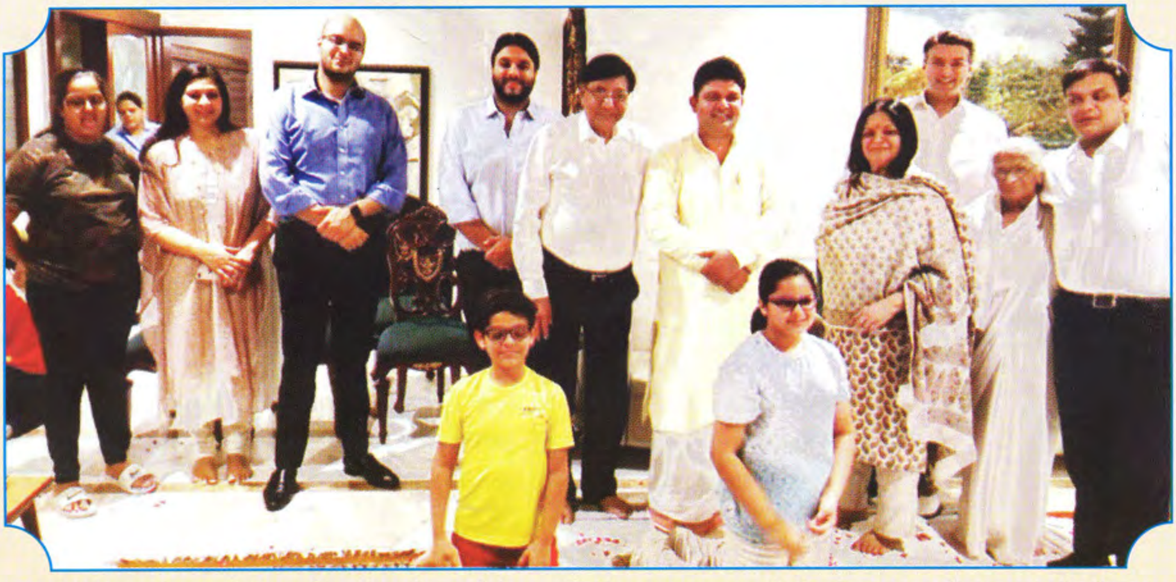

अमेठी शिक्षण संस्थान की चेयरपर्सन अमिता चौहान जी के जन्मदिन के अवसर पर आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी एवं अन्य परिवारीजन।

स्वामी श्रद्धानन्द अनाथालय करनाल के कार्यक्रम में हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी के साथ गुरुकुल के प्राचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी।

आर्य समाज गांधीधाम के कार्यक्रम में पदाधिकारियों द्वारा आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी का सम्मान।

विश्ववारा संस्कृति

आर्य समाज, बी-69, सैक्टर-33, नोएड़ा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221